

नये नियम का इतिहास, साहित्य और धर्मशास्त्र

सत्र #4: प्रेरणा, प्रामाणिकता और पाठ का प्रसारण।

टेड हिल्डेब्रांट

A. परिचय [00:00-00:50]

क. परिचय: एन.टी. का लेखन और संरक्षण

[लघु वीडियो: एच को मिलाएं; 00:00-12:38]

ठीक है, आपका फिर से स्वागत है, अब हम विषय बदलना चाहेंगे, हम फारसियों, यूनानियों, मैकाबीन, हेसोनियों से लेकर हेरोद तक की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के बारे में बात कर रहे हैं। और हमने विभिन्न यहूदी संप्रदायों के बारे में बात की है: फरीसी, सद्दुकी, एसेन और ज़ीलॉट्स। हमने सैनहेड्रिन, आराधनालय की संस्था, डायस्पोरा, सामरी और इस तरह की अन्य संस्थाओं के बारे में बात की है।

बी. प्रेरणा [00:50-2:11]

अब मैं एक अलग सवाल पर बात करना चाहता हूँ। इस स्कूल में हम मानते हैं कि बाइबल परमेश्वर का वचन है। इसलिए हम नए नियम के पाठ के बारे में बात करने जा रहे हैं। नया नियम हमारे पास कैसे आया? हम कहेंगे कि बाइबल और नया नियम परमेश्वर की ओर से है और हमारे NIV, NRSV या अन्य अनुवादों में हमारे पास आया है। बाइबल परमेश्वर से हमारे पास कैसे आई? मैं उस प्रक्रिया का पता लगाना चाहता हूँ कि नया नियम परमेश्वर से हमारे पास कैसे आया। इसलिए हम प्रेरणा से परमेश्वर से हमारे पास अनुवाद की ओर जा रहे हैं। यहाँ पूरी बात का एक बड़ा चित्र है। सबसे पहले मुझे अपना NIV कहाँ से मिला? तो सबसे पहले हम प्रेरणा की प्रक्रिया की शुरुआत करते हैं, प्रेरणा की प्रक्रिया में, यहाँ चार प्रक्रियाएँ शामिल हैं। प्रेरणा में परमेश्वर किसी भविष्यवक्ता या प्रेरित से बात करता है और प्रेरित या भविष्यवक्ता उसे लिखता है। तो हमारे पास प्रेरणा की

प्रक्रिया है जिसमें परमेश्वर किसी प्रेरित से बात करता है और फिर वह उसे लिखता है। इसके बाद प्रेरित या भविष्यवक्ता द्वारा उसे लिखने के बाद।

सी. संत घोषित करना [2:11-3:12]

ऐसे कई भविष्यवक्ता थे जिनमें से कुछ ने परमेश्वर के वचन लिखे थे जो हमारे पास नहीं हैं। इसे कभी भी कैनोनिकल शास्त्रों में संग्रहित नहीं किया गया। कैनोनिकल शास्त्र उन पुस्तकों का संग्रह है जिन्हें परमेश्वर ने लिखा था। उदाहरण के लिए, पुराने नियम में हम भविष्यवक्ता हुल्दा के बारे में जानते हैं, और हम जानते हैं कि वह यिर्मयाह के समय के आसपास थी। वह एक भविष्यवक्ता थी, परमेश्वर ने उससे बात की। हमारे पास एक और भविष्यवक्ता अहिय्या है जिसने यारोबाम और रहूबियाम के खिलाफ भविष्यवाणी की थी और उस समय के आसपास अहिय्या भविष्यवक्ता का उल्लेख राजाओं की पुस्तक में किया गया है। हम उसके लेखन के बारे में जानते हैं। सुलैमान ने 3,000 कथावतें लिखीं और हमें केवल 375 कथावतें लगभग 1/10 मिलीं। उसने 1,000 गीत लिखे और हमें केवल एक सुलैमान का गीत और भजन संहिता में कुछ ही मिले। शायद यही पर्याप्त था। लेकिन वैसे भी, किताबें और विहित प्रक्रिया आधिकारिक पुस्तकों का संग्रह है। कुछ किताबें संग्रहित नहीं की जाती हैं और कुछ की जाती हैं। यह विहितीकरण की प्रक्रिया है।

डी. ट्रांसमिशन [3:12-5:28]

जब आपको प्रेरणा मिलती है, भगवान की बात आती है, तो किताबें एक समूह में एकत्रित हो जाती हैं। अब आपको उन्हें बार-बार कॉपी करना होगा। हज़ारों सालों तक पुराने नियम और नए नियम दोनों की हाथों से नकल की गई। 2,000 सालों तक नए नियम की नकल शास्त्रियों द्वारा बार-बार की गई। शास्त्रियों में इंसान होते हैं। शास्त्रियों से गलतियाँ होती हैं। हमारे पास शास्त्रियों द्वारा 2,000 सालों की अवधि में की गई नकलों की प्रतियाँ हैं, हज़ारों शास्त्रियों ने पहले भगवान के वचन की नकल की। जब उन्होंने इसकी नकल की, तो कभी-कभी उन्होंने वर्तनी की गलतियाँ कीं। कभी-कभी उन्होंने अन्य चीज़ें कीं। हम देख सकते हैं कि उन्होंने किस तरह की गलतियाँ कीं। लेकिन इन शास्त्रियों ने पांडुलिपियाँ बनाईं। सैकड़ों साल बाद हम उस पांडुलिपि को उठाते हैं जिसे

अलेक्जेंड्रिया में एक शास्त्रियों ने बनाया था। हमारे पास एक शास्त्रज्ञ है जो सेंट कैथरीन मठ में माउंट सिनाई में था और उसने शास्त्रों की नकल की। हमारे पास सिनाईटिकस नाम की एक प्रति है। तो मूल रूप से शास्त्रियों ने इनकी नकल की। जैसे-जैसे उन्होंने उनकी नकल की, उन्होंने उन्हें अलग-अलग सामग्रियों पर भी कॉपी किया और इससे यह प्रभावित हुआ कि ये सामग्रियाँ कितने समय तक टिकेंगी। अगर उन्होंने उन्हें चर्मपत्र या जानवरों की खाल पर कॉपी किया, तो यह लंबे समय तक टिकेगी। जानवरों की खाल का चमड़ा लंबे समय तक टिकता है। लेकिन अगर उन्होंने इसे पपीरस पर कॉपी किया - पपीरस एक तरह से बांस के खंडहर और बैल की खाल के बीच का मिश्रण है और मूल रूप से उस कार्बनिक पदार्थ के रेशे आपस में मिलकर कागज बनाते हैं। लेकिन समस्या यह है कि वे कार्बनिक पौधे से बने होते हैं और ऐसा होता है कि अगर हवा में कोई नमी होती है तो पपीरस बस बिखर जाता है। पपीरस केवल मिस्र जैसी जगहों पर ही टिकता है। इसलिए वहाँ लेखकों को कई तरह की समस्याएँ थीं। अब जब हमारे पास ये पांडुलिपियाँ हैं और हम इन पांडुलिपियों को दुनिया भर से इकट्ठा करते हैं। ब्रूस मेटज़गर और अन्य लोगों जैसे विद्वान, कर्ट एलैंड दुनिया भर से इन पांडुलिपियों को इकट्ठा करते हैं और वे उनकी एक-दूसरे से तुलना करते हैं। फिर वे हमें एक संपादित पाठ देते हैं, जिसमें लिखा होता है, "ठीक है, हमारे पास इस तरह की 10 पांडुलिपियाँ हैं, उस तरह की 10 पांडुलिपियाँ हैं। वे सभी पांडुलिपियों का वजन करते हैं और फिर हमें ग्रीक पाठ देते हैं। यही हमारे पास एलैंड न्यू टेस्टामेंट या यूबीएस ग्रीक न्यू टेस्टामेंट में है और यह आपको बताएगा कि किस पांडुलिपि में क्या है।

ई. अनुवाद [5:28-6:16]

फिर हम उनसे, यूबीएस ग्रीक पाठ को अंग्रेजी में अनुवाद करते हैं। जब भी आप दो भाषाओं के बीच जाते हैं जैसे कि न्यू टेस्टामेंट में ग्रीक, तो हम ग्रीक से अंग्रेजी में जा रहे हैं। अनुवादकों के अनुवाद करने के तरीके में अंतर होने जा रहा है। इसलिए किंग्स जेम्स संस्करण एनआईवी से अलग होने जा रहा है। यह लिविंग बाइबल से अलग है, एनएलटी [न्यू लिविंग ट्रांसलेशन], ईएसवी या एनआरएसवी से अलग है। प्रत्येक अनुवाद समूह इसे अलग-अलग तरीके से अनुवाद करने जा रहा है। यूजीन पीटरसन का, द मैसेज, अभी भी अलग होगा। इसलिए वे

अनुवाद की प्रक्रिया में अलग-अलग होंगे और फिर लिपिकीय अंतरों को ध्यान में रखने के बाद भाषाओं के बीच। तो ये मूल रूप से चार प्रक्रियाएँ हैं।

एफ. प्रेरणा पर छंद [6:16-8:16]

मैं उन्हें थोड़ा और विस्तार से देखना चाहता हूँ। हमने पुराने नियम में पहले भी ऐसा कुछ किया है। यह प्रेरणा पर एक क्लासिक श्लोक है। मुझे इसे पढ़ने दें। यह 2 तीमुथियुस 3:16 है। यह एक बहुत प्रसिद्ध श्लोक है, प्रेरणा की प्रक्रिया के लिए बहुत महत्वपूर्ण श्लोक है। "सारा शास्त्र ईश्वर से प्रेरित है" - वास्तव में वहाँ शब्द है "ईश्वर ने सांस ली।" "सारा शास्त्र ईश्वर ने सांस ली है और हमें यह सिखाने के लिए उपयोगी है कि क्या सच है और हमें एहसास कराता है कि हमारे जीवन में क्या गलत है। यह हमें सीधा करता है और हमें वही करना सिखाता है जो सही है।" मुझे लगता है कि यह NLT है। आप यहाँ NIV देख सकते हैं। "सारा शास्त्र ईश्वर ने सांस ली है और धार्मिकता के लिए सिखाने, सुधारने और प्रशिक्षण के लिए उपयोगी है।" दिलचस्प बात यह है कि पॉल यहाँ तीमुथियुस से बात कर रहा है और वह कहता है कि तीमुथियुस तुम्हारी माँ ने तुम्हें शास्त्र सिखाए हैं और तुम्हारी दादी ने तुम्हें तब से शास्त्र सिखाए हैं जब तुम छोटे बच्चे थे। वह किस शास्त्र की बात कर रहा है? जब पौलुस "सारे शास्त्र" कहता है, तो वह जिन शास्त्रों के बारे में बात कर रहा है, वह सेप्टुआजेंट के बारे में बात कर रहा है क्योंकि तीमुथियुस यूनानी था और उसे यूनानी शास्त्र-- सेप्टुआजेंट पढ़ाया गया होगा। इसलिए यह समझना महत्वपूर्ण है। अब यहाँ एक बढ़िया श्लोक भी है। 2 पतरस 1:21 में-- यह प्रेरणा पर एक और क्लासिक श्लोक है। यह कहता है: "क्योंकि भविष्यवाणी कभी भी मनुष्य की इच्छा से नहीं हुई। बल्कि मनुष्य पवित्र आत्मा के द्वारा प्रेरित होकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे।" अब इसका मतलब यह है कि भविष्यवाणी मनुष्य की इच्छा से नहीं हुई। यह मनुष्य द्वारा किंवदंतियाँ और कहानियाँ बनाना और उन्हें आगे बढ़ाना नहीं था। शास्त्र कभी भी मनुष्य की इच्छा से नहीं हुआ। लेकिन मनुष्य परमेश्वर की ओर से बोलता था और पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित होता था। यह परमेश्वर का कार्य था। तो ये दो श्लोक, साथ ही अन्य श्लोक परमेश्वर के बोलने और भविष्यद्वक्ताओं द्वारा प्रेरणा में चीजों को लिखने की धारणा को उजागर करते हैं।

जी. लिखित अभिलेखों के लाभ: संरक्षण [8:16-9:25]

लिखित अभिलेखों के क्या लाभ हैं? परमेश्वर ने बहुत सी बातें कही हैं, यीशु ने उदाहरण के लिए जॉन 21 के अंत में बहुत सी बातें कही हैं, मेरा मानना है कि ऐसा है। जॉन ने कहा "यीशु ने और भी बहुत सी बातें कही हैं जो इन पुस्तकों में दर्ज नहीं हैं। लेकिन ये दर्ज हैं ताकि तुम विश्वास कर सको।" तो यीशु ने बहुत सी बातें कही हैं, यीशु ने बहुत से उपदेश दिए हैं जो हमारी बाइबल में दर्ज नहीं हैं। लेकिन यीशु ने मौखिक रूप से बात की। तो लिखित रूप में बातें करने और मौखिक से लिखित रूप में जाने के क्या लाभ हैं? लिखित ग्रंथों के लाभों में से एक संरक्षण की धारणा है। जब मैं कक्षा में 100 छात्रों से बात करता हूँ तो शब्द मेरे मुँह से निकलते हैं और दस मिनट के भीतर उनमें से अधिकांश भूल जाते हैं कि मैंने क्या कहा। इसलिए शब्द निकलते हैं और लोगों के दिमाग में चले जाते हैं और वे केवल कुछ समय तक ही टिकते हैं। जब कुछ लिखा जाता है, तो वह आसानी से 100 साल तक टिक सकता है। जब कुछ लिखा जाता है तो उसे संरक्षित किया जा सकता है जबकि मौखिक बातें हवा में चली जाती हैं और गायब हो जाती हैं। इसलिए संरक्षण के मामले में लाभ है।

एच. परिशुद्धता [9:25-12:38]

दूसरी बात है सटीकता। जब कोई व्यक्ति बोलता है, तो बातें बहुत तेज़ी से आगे बढ़ती हैं। आपको उन्हें जल्दी से पकड़ना होता है और वे आगे निकल जाती हैं और चीजों का विश्लेषण करना मुश्किल होता है। जब आपके पास कोई लिखित पाठ होता है, तो आप उसे पढ़ सकते हैं और उस पर विचार कर सकते हैं, देख सकते हैं, उस पर विचार कर सकते हैं। आप उसकी व्याख्या कर सकते हैं, आप विभिन्न शब्दों पर अध्ययन कर सकते हैं, वाक्यविन्यास व्याकरण पर अध्ययन कर सकते हैं। आप इसके भाषण की विशेषताओं और अलंकारिक विशेषताओं को देख सकते हैं। सभी प्रकार के दृष्टिकोण हैं, आप इसे विभिन्न दृष्टिकोणों से देख सकते हैं और ले सकते हैं। इसलिए सटीकता, जब कुछ लिखा जाता है तो यह बहुत दिलचस्प होता है, यहाँ तक कि इन वीडियो को बनाने के मामले में भी। जब कोई बोल रहा होता है और मैं खुद को इनमें से कई वीडियो में पाता हूँ, तो मैं बहुत लापरवाही से बोलता हूँ। जब मैं लिखता हूँ तो मैं बहुत अधिक सटीक तरीके से लिखता हूँ। किसी चीज़ को लिखने के तरीके में बहुत अंतर होता है और अगर आप में से किसी ने कॉलेज के

पेपर लिखे हैं, तो आपको एहसास होगा कि आप उन पेपर की तरह बात नहीं करते हैं जो आप लिखते हैं। जब आप लिखते हैं, तो यह बहुत अधिक सटीकता और बहुत अधिक सटीकता और बहुत अधिक संक्षिप्तता के साथ होता है। जब मैं बोलता हूँ, तो अक्सर मैं खुद को दोहराता हूँ। अगर आप लिखित रूप में खुद को दोहराते हैं, तो आपके अंग्रेजी प्रोफेसर क्या करेंगे? खैर, वे शब्द को निरर्थक लिखेंगे। क्योंकि लिखित रूप में आप वास्तव में एक ही बात को दो बार नहीं लिखते हैं। इसे निरर्थक माना जाता है। यह नकारात्मक है, जबकि जब आप बोलते हैं, तो आप अक्सर खुद को दोहराते हैं। अगर किसी ने हाल ही में राजनीतिक प्रवचन सुना है, तो आप जानते हैं कि वे एक ही बात को बार-बार दोहराते हैं। यहां तक कि प्रमुख भाषणों में भी जहां वे राज्य के संघ से बात करते हैं, इनमें से आधे वाक्यांश हम पहले ही सुन चुके हैं, इसलिए यह सिर्फ दोहराव है। इसलिए जब कोई व्यक्ति लिखता है, तो यह "चीजों के मौखिक पहलू" की तुलना में बहुत अधिक सटीक होता है।

इसलिए सटीकता का मतलब है चीजों को लिखना और उनका प्रचार करना। जब कोई व्यक्ति बोलता है, तो यह मुंह से निकलता है - आप बोलते हैं और यह यहीं और अभी 100 लोगों तक पहुंच जाता है। लेकिन जब मैं लिखता हूँ, तो आप इसे इंटरनेट पर डाल सकते हैं और अरबों लोग इसे देख सकते हैं। एक वीडियो वायरल हो सकता है और 17 मिलियन लोग इस वीडियो को देख सकते हैं। इसलिए मूल रूप से जब आपने कुछ रिकॉर्ड किया है या आपने कुछ लिखा है तो इसका प्रचार किया जा सकता है। बाइबिल दुनिया में सबसे अधिक प्रकाशित पुस्तकों में से एक है। दुनिया भर में लगभग सभी भाषाओं में इसकी लाखों-करोड़ों प्रतियां निकल रही हैं। इसलिए जब कुछ लिखा जाता है तो इसका प्रचार किया जा सकता है। इसे फैलाया जा सकता है। लेखक इसे कॉपी कर सकते हैं। कई लेखक इसे कॉपी कर सकते हैं। यह बोले गए शब्द से कहीं ज़्यादा बढ़ सकता है।

इसलिए यह हमारे लिए बहुत फायदेमंद है कि अभिलेख लिखे गए। पवित्रशास्त्र में परमेश्वर ने भविष्यद्वक्ताओं से कहा था "यहोवा ने ऐसा कहा" - उसने भविष्यद्वक्ताओं से बात की और भविष्यद्वक्ताओं/प्रेरितों ने इसे नए नियम में लिखा। तो अब हमारे पास परमेश्वर प्रेरितों से बात कर

रहा है और प्रेरित इसे लिख रहे हैं। हम मार्क और ल्यूक और लेखकत्व के बारे में बात करेंगे और देखेंगे कि चीजें कैसे काम करती हैं।

I. नये नियम का लेखन: प्रेरितों का मरना [12:38-14:48]

बी. एन.टी. का लेखन

[लघु वीडियो; संयुक्त आई.एम.; 12:38-19:35]

आरंभिक चर्च ने प्रेरितों की पुस्तकों को इकट्ठा करना क्यों शुरू किया जिसे हम नए नियम के रूप में जानते हैं? कौन सी ताकतें लेखन को आगे बढ़ा रही थीं? शिष्यों ने यह सब लिखने का फैसला क्यों किया? यीशु ने उनसे बात की थी, उन्होंने उपदेश सुने थे। वे यीशु की कहानियाँ जानते थे। प्रेरितों ने इन्हें लिखना क्यों शुरू किया? अधिकांश सुसमाचार लेखकों ने ऐसा क्यों किया? हमें लगता है कि अधिकांश सुसमाचार लेखक 50 के दशक में लिखे गए थे। यीशु के बाद 20 या 30 साल की अवधि है जब उन्हें नहीं लिखा गया। उन्हें छोटी कहानियों या अंशों में लिखा गया हो सकता है और फिर एकत्र किया गया हो। हम इन सभी के बारे में निश्चित नहीं हैं। दस्तावेजों के बारे में एक प्रागैतिहासिक तरह की बात है। 50 और 60 के दशक में इन चीजों को लिखने के लिए इतना जोर क्यों दिया गया ताकि सुसमाचार लेखक लिख सकें? प्रेरितों की मृत्यु के कारण। प्रेरित प्रत्यक्षदर्शी थे। मार्क एक प्रेरित नहीं था लेकिन वह संभवतः यरूशलेम में एक प्रत्यक्षदर्शी था। मैथ्यू एक प्रत्यक्षदर्शी था। जॉन एक चश्मदीद गवाह था। पीटर और पॉल गवाह थे। इसलिए जब ये लोग मर रहे थे तो इन कहानियों को लिखना बहुत ज़रूरी हो गया क्योंकि जब ये लिखी जाती हैं तो ये हमेशा के लिए रह जाती हैं।

मेरे अपने परिवार का एक उदाहरण है, जब मेरा बेटा अफ़गानिस्तान से वापस आया, उसके पास ये वाकई दिलचस्प कहानियाँ थीं। इसलिए वह इन कहानियों को मौखिक रूप में और अन्य चीज़ों में बताता है, लेकिन उन्हें लिखा नहीं जाता। तो क्या होता है कि कहानियाँ समय-समय पर बदलती रहती हैं। इसके अलावा, फिर उन्हें रिकॉर्ड नहीं किया जाता, वे हवा में चली जाती हैं। मेरी पत्नी और मैं उन्हें सुनते हैं और फिर वे गायब हो जाती हैं। कुछ चीज़ों को संरक्षित करने की ज़रूरत

होती है और आप उसे लिखना चाहते हैं। लेकिन वैसे भी प्रेरित मर रहे हैं। यीशु की कहानियाँ, उन्हें लिखने की ज़रूरत है। लोग शायद प्रेरितों के पीछे पड़ गए, "हे मैथ्यू, यह जानकर अच्छा लगा कि आप यीशु के बारे में ये सारी कहानियाँ जानते हैं और आपने हमें ये सारी कहानियाँ सुनाई हैं, लेकिन इसे लिख लें क्योंकि यह हमेशा के लिए रहने वाली है, आप मरने वाले हैं" और ज़्यादातर सभी प्रेरित मारे गए। जॉन को छोड़कर उनमें से लगभग सभी 12 संभवतः शहीद हो गए। वे मर रहे थे, इसलिए कहानियों को लिखने की ज़रूरत थी।

जे. लेखन एन.टी.: भौगोलिक प्रसार [14:48-15:39]

ईसाई धर्म का भौगोलिक प्रसार भी है। इससे पहले जब यह यरूशलेम में था, तो सभी प्रेरित यरूशलेम में थे। वे एक-दूसरे से पूछ सकते थे और यीशु की कहानियाँ सुना सकते थे और अलग-अलग चीज़ों पर चर्चा कर सकते थे। लेकिन जैसे-जैसे चीज़ें फैलने लगीं, उन्हें लिखने की ज़रूरत ज़्यादा होने लगी ताकि रिकॉर्ड को दूसरे स्थानों पर ले जाया जा सके, जैसे कि इफिसस के चर्च में, या कोरिंथ के चर्च में। वे चाहते थे कि इसे रोम ले जाया जाए और कहानी को लिखकर उनसे रोम ले जाया जाए। इसलिए ईसाई धर्म के भौगोलिक प्रसार ने इस एकता और विविधता को जन्म दिया। जब आप यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि चीज़ें सही हैं, तो चीज़ों को लिखने और उन्हें सुरक्षित रखने की ज़रूरत होती है।

के. विधर्म [15:39-17:17]

यहाँ एक और बड़ा है। प्रारंभिक चर्च में, यह दूसरी शताब्दी में आ रहा है - 100 ई. के बाद का दिन। आपके पास विधर्म लोग आने लगे। आपके पास मोंटानिज़्म था - भविष्यवक्ता आ रहे थे और कह रहे थे कि वे ईश्वर की ओर से बोल रहे हैं। और आप कहते हैं, "एक मिनट रुकिए, आपके पास वही होगा जो हमारे पास न्यू टेस्टामेंट में था।" तो आप कहते हैं, आपको यह समझने के लिए न्यू टेस्टामेंट के कुछ दस्तावेज़ होने चाहिए कि क्या सच है और क्या गलत है। विशेष रूप से दूसरी शताब्दी में ग्नोस्टिसिज़्म बढ़ रहा था, जहाँ शरीर और गुप्त ज्ञान पर आत्मा का स्पष्ट रूप से पक्षपात किया जाता था, जिसका दावा ग्नोस्टिक्स द्वारा किया जाना चाहिए था। क्या होता है कि ईसाई कह रहे

हैं "नहीं, यह ईसाई धर्म नहीं है।" आपको अपने दस्तावेज़ों को लिखित रूप में रखने की आवश्यकता है। आपको अपने दस्तावेज़ों को एक साथ लाने में सक्षम होने की आवश्यकता है। आपको पता चल जाएगा कि इन त्रुटियों का खंडन कैसे किया जाए जो विधर्मी प्रकार की चीजों में बढ़ रही थीं। मार्सियन... डॉ. विल्सन ने अपनी पुस्तक *आवर फादर अब्राहम में मार्सियन का एक भाग लिखा है।* मार्सियन ने मूल रूप से पुराने नियम को देखा और उसे पुराने नियम का ईश्वर पसंद नहीं आया इसलिए उसने पुराने नियम को खारिज कर दिया और केवल नए नियम को स्वीकार किया। खैर, यह सही नहीं है। इसलिए प्रारंभिक चर्च को इस तरह की राय से निपटना पड़ा जो चर्च पर थोपी गई थी और चर्च को खुद का बचाव करना पड़ा। इसलिए उन्हें यह तय करना था कि हम किन पुस्तकों को पवित्र और ईश्वर से प्राप्त मानेंगे। और किन पुस्तकों को हम अस्वीकार करेंगे? मार्सियन की राय को अस्वीकार कर दिया गया। पुराना नियम अच्छा है और इसे "पहला नियम" कहा जाता है जैसा कि डॉ. विल्सन कहते हैं।

एल. नया नियम लिखना: पादरी संबंधी चिंताएँ [17:17-18:14]

अब पादरी संबंधी चिंताएँ भी थीं। जब कोई उपदेशक मंच पर आता है और उपदेश देता है कि कौन से उपदेश ईश्वर की ओर से हैं? उपदेशक सिर्फ़ अपने विचारों का प्रचार नहीं करना चाहता। वह ईश्वर की ओर से एक पाठ से बोलना चाहता है। ईश्वर अपने प्रेरितों से अपने लोगों से। इसलिए अगर वह ईश्वर के वचन का प्रचार करने जा रहा है तो वह अपने लोगों को उपदेश देने के लिए किन पुस्तकों का उपयोग करने जा रहा है? कौन सी पुस्तकें ईश्वर की ओर से नहीं हैं? अब, वैसे, कुछ रोचक हो सकते हैं, उदाहरण के लिए, हर्मिस का शेपर्ड या रोम के क्लेमेंट का पत्र। क्लेमेंट के पत्र प्रारंभिक चर्च के पिताओं के लिए रोचक हो सकते हैं जो पत्र भी लिख रहे थे। वे पत्र प्रारंभिक चर्च के लिए रोचक और उपदेशात्मक रूप से सहायक हो सकते हैं लेकिन उपदेशक यह जानना चाहेंगे कि ईश्वर का वचन क्या है और क्लेमेंट क्या कहने जा रहा है। क्लेमेंट कुछ ऐसा कहने जा रहा है जो रोचक है लेकिन वास्तव में ईश्वर का वचन नहीं है। यह कहानियों के संदर्भ में उसके चर्च के लिए फायदेमंद हो सकता है लेकिन यह ईश्वर का वचन नहीं है।

एम. नया नियम लिखना: उत्पीड़न [18:14-19:35]

अंत में, यह एक बहुत बड़ा है: उत्पीड़न। आरंभिक चर्च में उत्पीड़न था। अब बहुत सारा उत्पीड़न स्थानीय स्तर पर हुआ। स्थानीय समुदाय जैसा कि आप पॉल में पहली मिशनरी यात्रा में देखते हैं, जब उसे स्थानीय कारणों से पीटा जाता है। मैथ्यू इस बारे में एक बिंदु बताता है। मैथ्यू एक रोमन कर संग्रहकर्ता था और यदि आप रोम के दृष्टिकोण से ईसाइयों को पूरी तरह से खत्म करने के लिए ईसाइयों को निचोड़ते हैं, तो रोम वास्तव में बहुत परवाह नहीं करता था। यह मुख्य रूप से स्थानीय समुदाय थे जो ईसाइयों पर दबाव डालते थे। आप किन पुस्तकों के लिए मरने जा रहे हैं? आपके पास एक पुस्तक है जो द शेफर्ड ऑफ हर्मीस है और आपके पास मैथ्यू का सुसमाचार है। क्या आप द शेफर्ड ऑफ हर्मीस के लिए मरने जा रहे हैं? द शेफर्ड ऑफ हर्मीस ईश्वर का वचन नहीं है। यह एक समस्या है। मैथ्यू की पुस्तक ईश्वर का वचन है। यह एक समस्या है। इसलिए आरंभिक चर्च को यह तय करना था कि वे किन पुस्तकों के लिए मरने जा रहे हैं और किन पुस्तकों के लिए नहीं मरने जा रहे हैं। वे जानना चाहते थे कि किन पुस्तकों में परमेश्वर का वचन दर्ज है, और कौन सी पुस्तकें महत्वपूर्ण हैं। इसलिए इन कारणों से, चर्च को यह तय करना पड़ा कि कौन सी पुस्तकें केवल मानवीय हैं और कौन सी पुस्तकें परमेश्वर का वचन हैं।

एन. कैनोनिकिटी [19:35-22:29]

सी. एनटी की प्रामाणिकता

[लघु वीडियो; संयोजित: एनआर; 19:35-33:57]

अब, प्रामाणिकता की खोज कैसे की जाती है? वे कैसे पता लगाते हैं कि कौन सी पुस्तकें प्रेरित थीं और कौन सी पुस्तकें ईश्वर से आई थीं, इस पर मुख्य प्रश्न क्या हैं? पहला प्रश्न जो आप पूछते हैं, वह यह है कि क्या यह प्रेरित था? क्या पुस्तक प्रेरित है? क्या नए नियम के लेखक लिखते समय जानते थे कि वे शास्त्र लिख रहे हैं या क्या उन्होंने सोचा कि वे कुलुस्सियों या इफिसियों को चर्च को एक पत्र लिख रहे हैं और यह वास्तव में ईश्वर का वचन नहीं है? इसे ईश्वर का वचन माना जाने लगा, लेकिन यह वास्तव में नहीं था। आपके पास यहाँ कुछ दिलचस्प अंश हैं। मैं आपको प्रकाशितवाक्य 22:18 पढ़कर सुनाता हूँ, पुस्तक के अंत में, सर्वनाश के अंत में यूहन्ना यह कहता है: “यदि कोई इन शब्दों में जो उसने लिखे हैं, उन्हें जोड़ता है, तो परमेश्वर इस पुस्तक में वर्णित

विपत्तियों को उस पर बढ़ाएगा। और यदि कोई इस भविष्यवाणी की पुस्तक से इन शब्दों को निकालता है, तो परमेश्वर उससे जीवन के वृक्ष में उसका हिस्सा छीन लेगा।” तो दूसरे शब्दों में, मैंने यह पुस्तक लिखी है। ये शब्द ईश्वर से हैं। आप इन शब्दों में कुछ न जोड़ें और न ही कुछ घटाएँ। यदि आप उन्हें जोड़ते हैं तो आपको समस्याएँ होंगी क्योंकि आप इस पुस्तक से विपत्तियाँ अपने ऊपर जोड़ रहे हैं। यदि आप उनसे कुछ घटाते हैं, तो आप अपने आप से जीवन के वृक्ष को भी हटा रहे हैं। वैसे, यह व्यवस्थाविवरण में मूसा के लिखे जाने के समय हुई घटना से बहुत मिलता-जुलता है। मूसा ने व्यवस्थाविवरण 4:2 में कहा, "न जोड़ें और न घटाएँ।" तो इस तरह की बातें हैं कि ये चीज़ें परमेश्वर की ओर से हैं। आप इन चीज़ों के साथ खिलवाड़ नहीं कर सकते। 1 कुरिन्थियों 14:37 में यह दिलचस्प है, पौलुस ने प्रभु की आज्ञाओं के बारे में यह टिप्पणी की है "यदि कोई सोचता है कि वह भविष्यद्वक्ता है या आध्यात्मिक रूप से प्रतिभाशाली है, तो उसे यह स्वीकार करना चाहिए कि जो मैं तुम्हें लिख रहा हूँ वह प्रभु की आज्ञा है।" इसलिए पौलुस जानता था कि 1 कुरिन्थियों 14 में वह जो कुरिन्थियों को लिख रहा था वह प्रभु की आज्ञा थी। यह प्रभु की ओर से था। और इसलिए वह 1 कुरिन्थियों 14:37 में इसे स्वीकार करता है। मैं जो कहने की कोशिश कर रहा हूँ वह यह है कि जैसा कि वह 1 कुरिन्थियों 14 में लिखता है, ऐसा लगता है कि उसे इस बात का अहसास है कि वह जो लिख रहा है वह खुद से नहीं है। आप 2 पतरस 1:21 पर वापस जा सकते हैं कि पवित्रशास्त्र मनुष्य की इच्छा से नहीं था, बल्कि पवित्र लोग पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित थे। वे जानते थे कि उस प्रक्रिया में कुछ खास चल रहा था। तो क्या यह प्रेरित है? क्या यह दावा करता है? क्या यह ईश्वर से होने का दावा करता है? अब रोम के क्लेमेंट को कई लोगों ने प्रेरित माना था लेकिन यह कैनन में नहीं है। इसे स्वीकार नहीं किया गया।

O. कैनोनिकिटी: पिछले रहस्योद्घाटन मानदंड के साथ समझौता [22:29-24:03]

दूसरा मानदंड, मैं इन चीज़ों को एक साथ रख रहा हूँ। क्या यह पिछले रहस्योद्घाटन से सहमत है? और यह एक समस्या बन जाती है। पॉलीकार्प रूढ़िवादी है। इसलिए उसने जो लिखा वह पिछले रहस्योद्घाटन से सहमत है। जेम्स से सवाल किया गया क्योंकि जेम्स ने कहा "बिना विश्वास" क्या? "काम के बिना विश्वास मृत है।" तो फिर आपने पॉल को यह कहते हुए सुना होगा,

"यह अनुग्रह के माध्यम से विश्वास से है जो हमारे द्वारा नहीं है। व्यवस्था के कामों से नहीं, ताकि कोई घमंड न करे।" - किसी व्यक्ति को कामों से घमंड नहीं करना चाहिए। जेम्स कहते हैं "काम के बिना विश्वास मृत है।" मुझे अपने विश्वास के बारे में मत बताओ! शैतान का मानना है कि ईश्वर है! इसलिए आपको इसका सामना करना होगा। जबकि पॉल कहते हैं, "नहीं, नहीं, काम मत करो और घमंड मत करो।" इसलिए जेम्स से सवाल किया गया। आप में से कुछ लोग शायद मार्टिन लूथर के बारे में जानते होंगे। मार्टिन लूथर ने जेम्स की पुस्तक के बारे में कहा कि यह "एक सही फूहड़ पत्र" था। लूथर ने जेम्स से सवाल किया क्योंकि लूथर विश्वास और केवल विश्वास के द्वारा औचित्य पर जोर दे रहा था। इसलिए यह उसके परिदृश्य में फिट नहीं हुआ इसलिए उसने कहा कि जेम्स ने "फूहड़ पत्र" लिखा है। उन्होंने इसे नए नियम के पीछे धकेल दिया क्योंकि उन्होंने इस पर सवाल उठाया था क्योंकि उन्हें लगा कि यह पिछले रहस्योद्घाटन से असहमत है जैसा कि उन्होंने इसे समझा था। तो यह एक मानदंड लगता है कि आप देखते हैं कि इस मानदंड के आधार पर पुस्तकों पर सवाल उठाए जा रहे हैं। क्या यह पिछले रहस्योद्घाटन से सहमत है?

पी. कैनोनिकिटी: भविष्यवाणी या प्रेरितिक [24:03-26:01]

यहाँ एक और श्रेणी है। क्या यह भविष्यसूचक या प्रेरित है? क्या यह किसी भविष्यवक्ता या प्रेरित द्वारा लिखा गया है? आपके पास यशायाह, यिर्मयाह, यहजेकेल जैसे भविष्यवक्ता हैं। वे सभी भविष्यवक्ता हैं। यदि आप मूसा कहते हैं - मूसा पुराने नियम का बड़ा भविष्यवक्ता है। फिर से डेविड, राजा। नए नियम में आप पूछते हैं, क्या यह व्यक्ति प्रेरित है? मैथ्यू को एक प्रेरित द्वारा लिखा जाएगा। प्रेरितों के काम और लूका को संभवतः पॉल की देखरेख में लूका द्वारा लिखा जाएगा। पॉल समय से पहले प्रभु के पास आने वाला एक प्रेरित होगा। यहूदा के साथ एक दिलचस्प संबंध है जो संभवतः यीशु का भाई है। क्या यह प्रेरित है या भविष्यसूचक? क्या यह उन चैनलों के माध्यम से आया था जिन्हें भगवान को या तो भविष्यवक्ता या प्रेरित के रूप में अनुमोदित करना था? कई स्पूडेपिग्राफा में ध्यान दें कि वे अपने सुसमाचार को एक प्रेरित के साथ जोड़ते हैं। उदाहरण के लिए, थॉमस का सुसमाचार या पीटर का सर्वनाश या पॉल के कार्य हैं। इसलिए स्पूडेपिग्राफा में उन्होंने प्रेरितों के इन नामों का इस्तेमाल इसे महत्व देने के लिए किया। ताकि वे इन नामों में

अधिकारियों को पहचान सकें और देख सकें। तो यह यहाँ की एक बात लगती है। वैसे इब्रानियों की पुस्तक पर सवाल उठाया गया था, क्योंकि इब्रानियों का लेखक कौन है? उम्मीद है कि जब आप इस कोर्स के अंत में यह कोर्स करेंगे तो आपको पता चल जाएगा कि इब्रानियों का लेखक कौन है। मुझे ऐसा नहीं लगता। इब्रानियों का लेखक एक महान रहस्य है। लेकिन इब्रानियों की पुस्तक पर सवाल उठाया गया था क्योंकि उन्हें यकीन नहीं था कि इसे किसने लिखा है। क्या इसे लूका ने लिखा था? क्या इसे पौलुस ने लिखा था? क्या इसे अपोलोस ने लिखा था? हम नहीं जानते कि इसे किसने लिखा है। तो इस सिद्धांत के आधार पर पुस्तक पर सवाल उठाया गया था।

प्रश्न: कैनोनिकिटी: ईश्वर के लोगों द्वारा स्वीकृति [26:01-33:16]

क्या इसे परमेश्वर के लोगों ने ग्रहण किया? यह एक और श्रेणी है जो सामने आती है। क्या इसे आरंभिक चर्च में परमेश्वर के लोगों ने ग्रहण किया? क्या परमेश्वर के लोगों ने इसे परमेश्वर के वचन के रूप में ग्रहण किया? 2 पतरस 3:15 में एक सुंदर श्लोक है। मैं बस इसके बारे में एक पल के लिए बात करना चाहता हूँ। यहाँ बताया गया है कि यह क्या कहता है, लेकिन पहले मैं पतरस और पौलुस की पृष्ठभूमि बता दूँ। आरंभिक चर्च में पतरस और पौलुस, पतरस वह व्यक्ति था "पतरस इस चट्टान पर मैं अपना चर्च बनाऊँगा।" पतरस बड़ा आदमी था। प्रेरितों के काम की पुस्तक के पहले नौ अध्यायों में, पतरस आपके प्रमुख पात्रों में से एक है। पतरस वह है जो कुरनेलियुस और यरूशलेम परिषद में आता है। पतरस ही वह व्यक्ति है। लेकिन जो होता है वह यह है कि पौलुस दृश्य में देर से आता है। मान लीजिए कि पौलुस दमिश्क जा रहा है जो प्रेरितों के काम की पुस्तक में अध्याय 13 है। इसलिए पौलुस बाद में बचाया जाता है। यीशु बाद में पौलुस से मिलते हैं इसलिए उन्हें सीधे मसीह द्वारा प्रेरित बनाया जाता है। इसलिए आरंभिक चर्च में आपको पतरस और पौलुस के बीच संघर्ष देखने को मिलता है। पॉल अन्यजातियों की सेवा कर रहा है, जैसे पीटर यहूदियों की सेवा कर रहा था। अब सवाल यह है कि क्या अन्यजातियों को ईसाई बनने के लिए खतना करवाना पड़ता है? दूसरे शब्दों में, क्या अन्यजातियों को पहले यहूदी बनना पड़ता था? और फिर ईसाई बनना पड़ता था? या क्या अन्यजाति यहूदी बने बिना, बिना खतना के ईसाई बन सकते थे? सभी अन्यजातियों ने इसके खिलाफ मतदान किया। उन्होंने सभी ने कहा, "नहीं, हमें यह खतना पसंद

नहीं है।" लेकिन वैसे भी क्या अन्यजातियों को खतना करवाना पड़ता था? और क्या उन्हें कोषेर खाना भी पड़ता था? क्या वे सूअर का मांस या झींगा मछली और ये सभी कोषेर नियम नहीं खा सकते थे? क्या उन्हें उन कोषेर नियमों का पालन करना पड़ता था? पॉल ने कहा, "नहीं, उन्हें कोषेर खाना नहीं पड़ता और उन्हें खतना करवाने की ज़रूरत नहीं है। अब्राहम को खतना करवाने से ठीक पहले विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराया गया था। इसलिए अन्यजातियों को खतना करवाने की ज़रूरत नहीं है।" पीटर ने कहा, "आप जानते हैं, मैंने कभी कोई अशुद्ध चीज़ नहीं खाई है।"

गलातियों की पुस्तक में पॉल ने कहा कि उसने पतरस का सामना उसके सामने किया और उसके सामने ही उसे डांटा। गलातियों ने पॉल और पतरस के बीच बातचीत को दर्ज किया है जिसमें कहा गया है कि पॉल ने पतरस को डांटा। अब पतरस चर्च में बड़ा आदमी था। पॉल एक तरह से नया व्यक्ति था। पॉल अब पतरस को डांट रहा है। आपको क्या लगता है कि पतरस का रवैया पॉल के प्रति क्या होगा? वह सत्ता में रहने वाला व्यक्ति होगा। पॉल के प्रति पतरस की प्रतिक्रिया क्या है? 2 पतरस 3:15 में, पतरस ने पॉल और उसके लेखन के बारे में एक टिप्पणी की। यहाँ वह क्या कहता है, और यह वास्तव में काफी दिलचस्प है। 2 पतरस 3:15 कहता है, "जैसा कि हमारे प्रिय भाई पौलुस ने भी उस बुद्धि के अनुसार तुम्हें लिखा है जो परमेश्वर ने उसे दी थी।" अब यहाँ ध्यान दें, पतरस पहचानता है कि परमेश्वर ने पॉल को बहुत बुद्धि दी है। शुरू से ही वह इसे पहचानता है। परमेश्वर पॉल के माध्यम से बोल रहा है। परमेश्वर ने उसे जो बुद्धि दी है, उसके साथ "उसी तरह उसने अपनी सभी पत्रियों में इन बातों के बारे में लिखा है।" ऐसा लगता है कि पतरस को पॉल के संग्रह के बारे में पता है। वह जानता है कि पॉल ने एक से ज़्यादा पत्र लिखे हैं। जाहिर है कि पॉलिन का कोई संग्रह है। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि यह हमारे पास मौजूद चीज़ों से पूरी तरह से भरा हुआ था, लेकिन वह जानता था कि पॉल ने एक से ज़्यादा पत्र लिखे हैं। और उसके पास यह थोड़ा सा है, और "इन सभी पत्रों में वह इन चीज़ों के बारे में एक ही तरह से लिखता है। उसके पत्रों में ये बातें हैं।" अब पीटर की ओर से यह बात दिलचस्प है। पीटर क्या था? पीटर एक मछुआरा था। पीटर एक मछुआरा था - कोई बहुत पढ़ा-लिखा व्यक्ति नहीं। पॉल, जिसने, इसके विपरीत, गमलिएल के अधीन अध्ययन किया, जो अब तक के सबसे महान रब्बियों में से एक है। पॉल एक बहुत ही

प्रतिभाशाली विचारक था और गमलिलेय के अधीन अध्ययन किया और यहूदी धर्म को बहुत अच्छी तरह से जानता था। उसे फरीसियों के अधीन प्रशिक्षित किया गया था। और पॉल अविश्वसनीय था। ठीक है? तो अब पीटर पॉल के पत्रों पर कैसे प्रतिक्रिया करता है? पीटर मछुआरे। पतरस कहता है, "उसकी पत्रियों में कुछ ऐसी बातें हैं जिन्हें समझना कठिन है और जिन्हें अज्ञानी और अस्थिर लोग तोड़-मरोड़ कर पेश करते हैं" - अब यहाँ मुख्य बात है... "जिन्हें अज्ञानी और अस्थिर लोग दूसरे शास्त्रों की तरह तोड़-मरोड़ कर पेश करते हैं।" "जैसा कि वे दूसरे शास्त्रों के साथ करते हैं... अपने ही विनाश के लिए।" पतरस कह रहा है कि पौलुस की पत्रियाँ दूसरे शास्त्रों की तरह ही हैं। वे अस्थिर लोगों का खंडन करते हैं जैसे वे दूसरे शास्त्रों का करते हैं। पतरस पौलुस की पत्रों को दूसरे शास्त्रों के समान स्तर पर रख रहा है। इसलिए पतरस अब स्वीकार कर रहा है कि पौलुस जो लिख रहा है वह परमेश्वर की ओर से है। यह दूसरे शास्त्रों के समान स्तर है। यह पतरस और पौलुस के बीच एक बहुत ही महत्वपूर्ण बातचीत है। 2 पतरस 3:15 एक महान श्लोक है।

अब मैं एक अलग रणनीति अपनाता हूँ और 1 तीमुथियुस 5:18 को उठाता हूँ। यहाँ दिलचस्प बात यह है कि यह वाक्यांश काफी प्रसिद्ध है। यह कहता है "जब बैल अनाज रौंद रहा हो तो उसका मुँह न बाँधो। जब बैल अनाज रौंद रहा हो तो उसका मुँह न बाँधो।" ठीक है? यह कहाँ से आया है? यह व्यवस्थाविवरण अध्याय 5:4 से आता है: "जब बैल अनाज रौंद रहा हो तो उसका मुँह न बाँधो, क्योंकि शास्त्र कहता है..." वे इसे इस तरह से पेश करते हैं "क्योंकि शास्त्र कहता है कि जब बैल अनाज रौंद रहा हो तो उसका मुँह न बाँधो।" और यह व्यवस्थाविवरण की पुस्तक की तरह है। "जैसा शास्त्र कहता है," और वह व्यवस्थाविवरण 5:4 को उद्धृत करता है। फिर इस आयत का अगला भाग कहता है, "और मजदूर अपनी मजदूरी का हकदार है।" अब वह लूका 10:7 से उद्धृत कर रहा है। शास्त्र कहता है कि यह व्यवस्थाविवरण से है और फिर वह उन शास्त्रों को शास्त्र के रूप में एक के बाद एक रखता है। दोनों को उन शास्त्रों के रूप में लेबल किया गया है जो कहते हैं "बैल का मुँह मत बाँधो। और एक मजदूर अपनी मजदूरी का हकदार है।" यह यहाँ एक बहुत ही दिलचस्प श्लोक है। वह व्यवस्थाविवरण और ल्यूक को एक ही स्तर पर रख रहा है। फिर से, तो मैं

जो कहने की कोशिश कर रहा हूँ वह यह है कि शुरुआत में यह सैकड़ों और सैकड़ों साल बाद नहीं था। शास्त्र ने अधिकार प्राप्त किया और सैकड़ों साल बाद और अधिक प्रमुख हो गया। नहीं! हम यहाँ तीमुथियुस की बात कर रहे हैं। वह ल्यूक और व्यवस्थाविवरण को एक साथ रखता है। हम कह रहे हैं कि पीटर को पहले से ही पॉल के संग्रह के बारे में पता था; वे उन्हें विकृत करते हैं क्योंकि वे अन्य शास्त्रों को शास्त्रों के समान स्तर पर रखते हैं। लगभग 40, 65 ई. में पीटर की मृत्यु हो जाती है। तो पहले से ही लगभग 65 ई. में आपको पीटर द्वारा पॉल के लेखन के संग्रह के बारे में बात करते हुए मिल गया है और वे शास्त्र थे।

आर. कैनोनिकिटी: क्या यह जीवन को बदलने के लिए गतिशील है? [33:16-33:57]

आखिरी सवाल जो लोग पूछते हैं वह है "क्या यह गतिशील है?" क्या पुस्तक गतिशील है? क्या यह ईश्वर की शक्ति के साथ आती है? क्या पुस्तक में लोगों के जीवन को बदलने की क्षमता है? यह पादरी की चिंता है। उदाहरण के लिए कुछ लोग ल्यूक की पुस्तक पर सवाल उठाते हैं, यह कहते हुए कि यह वास्तव में ईश्वर की शक्ति के साथ नहीं आती है। तो यहूदा की पुस्तक पर सवाल इस आधार पर है: ईश्वर का वचन ईश्वर की शक्ति के साथ आता है। तो ये कुछ मानदंड हैं। फिर से यह कोई मानदंड नहीं है जो इस प्रामाणिकता को बनाता है, लेकिन ये चीजें भूमिका निभाती हैं क्योंकि चर्च इन दस्तावेजों का विश्लेषण कर रहा था ताकि यह पता लगाया जा सके कि कौन से दस्तावेज ईश्वर के थे क्योंकि उन्हें एकत्र किया जा रहा था।

एस. परिसंचरण समस्या [33:57-36:43]

डी. कैनोनिकिटी पीटी 2 - एनटी एंटीलेगोमेना

[लघु वीडियो: संयुक्त एस.वी.; 33:57-46:10]

अब एक समस्या है जिसे सर्कुलेशन समस्या कहा जाता है। पॉल ने इफिसियों को एक पत्र लिखा। इसका मतलब था कि इफिसुस के चर्च को पत्र मिला। लेकिन फिलिप्पी में ईसाइयों का एक समूह था, जिसके पास पत्र नहीं था। इसलिए मूल रूप से इफिसियों को लिखा गया पत्र इफिसुस में जाना जाता था, लेकिन फिलिप्पी में नहीं। कोरिंथियन चर्च पॉल ने कोरिंथियन चर्च को 3/4 या 2,3,4

पत्र लिखे। कोरिंथियन चर्च के पत्र कुलुस्सियों में नहीं जाने जाते थे। पॉल ने थोड़े समय के लिए कुलुस्सियों को भी पत्र लिखे। तो क्या हुआ कि चर्चों को इन पत्रों को साझा करना पड़ा। मूल रूप से, तब सर्कुलेशन की समस्या थी। फिर इफिसुस के चर्च के साथ, उस दस्तावेज़ की प्रतिलिपि बनाकर फिलिप्पी को भेजनी पड़ी। फिर फिलिप्पी के लोगों को आश्चर्य हुआ कि क्या यह वास्तव में पॉल का इफिसियों को लिखा गया पत्र है? क्या यह वास्तव में वैध है? हम यह कैसे जानते हैं? तो फिर दस्तावेज़ बस उन विभिन्न चर्चों से प्रसारित हो गए जिनके पास वे थे। इसलिए सर्कुलेशन की प्रक्रिया में लंबा समय लगा। फिर अगर आप मिस्र में हैं तो आप क्या करेंगे? पॉल ये सभी पत्र ग्रीस और तुर्की में लिख रहे हैं और आप मिस्र में हैं। और इसलिए आपको 1 कुरिन्थियों या ऐसा ही कुछ या थिस्सलुनीकियों की एक प्रति प्राप्त करने में 20 या 30 साल लग सकते हैं। मेरा मतलब है कि आपको इसे देखने में 30 या 50 साल लग सकते हैं। फिर चर्च ने इन पत्रों को अन्य चर्चों में प्रसारित किया। जैसे-जैसे वे प्रसारित होते गए और फिर आप पूछेंगे कि क्या यह वास्तव में पॉल से है। क्या यह वास्तव में पीटर या पॉल या जेम्स या किसी और से है? इसलिए मुझे लगता है कि यह समझना महत्वपूर्ण है कि नए नियम के किसी भी लेखक ने नया नियम नहीं देखा। मैथ्यू ने इसे कभी नहीं देखा। थॉमस ने इसे कभी नहीं देखा। फिलिप ने इसे कभी नहीं देखा। उन्हें कभी भी पूरा नया नियम देखने को नहीं मिला।

दरअसल जॉन की पुस्तक जल्दी होगी। रहस्योद्घाटन की पुस्तक शायद 90 के दशक तक नहीं लिखी जाएगी। खैर, 90 के दशक में पीटर 65 या उसके आसपास मर चुका है और पॉल 68 या उसके आसपास मर चुका है। अधिकांश प्रेरित 95/97 में रहस्योद्घाटन की पुस्तक से बहुत पहले चले गए थे, कहीं न कहीं। सभी प्रेरित चले गए हैं। उन्होंने कभी भी नए नियम के कैनन को पूरा होते नहीं देखा। नए नियम के कैनन, उस दस्तावेज़ को एशियाई माइनर में भेजा जाएगा - पश्चिमी भाग में एशिया माइनर के सात चर्चों में और प्रसारित किया जाएगा लेकिन रोम के लोगों को यह दस्तावेज़ वास्तव में वहां पहुंचने से काफी बाद या एक सदी बाद तक नहीं मिला। इसलिए मुझे लगता है कि यह समझना एक महत्वपूर्ण बात है। नए नियम के लेखकों में से कोई भी नए नियम को एक साथ नहीं देख सकता था।

टी. चर्च द्वारा संग्रह [36:43-38:08]

संचलन की समस्याएँ--इफिसुस के पास यह था लेकिन यरूशलेम के पास नहीं था। मूल रूप से, जो हुआ वह यह था कि फिलिप्पी को इफिसियों से एक पत्र मिला जिसमें लिखा था कि ठीक है? अब हमारे पास इफिसियों की पुस्तकें हैं। फिर हमारे पास थिस्सलुनीका है और फिलिप्पी थिस्सलुनीका के बगल में है। इसलिए वे बहुत जल्दी अदला-बदली करते हैं। तब यह मुश्किल होता है। इसलिए प्रत्येक चर्च ने उन्हें जैसे ही प्राप्त किया, वैसे ही एकत्र कर लिया, लेकिन इन पुस्तकों को अदला-बदली करने में बहुत समय लग जाता था। ऐसा नहीं था कि आप बस जाकर कह सकते थे कि ठीक है हमें पॉल का पत्र मिला है, ज़ेरॉक्स मशीन के साथ बैठो और बस इसे ज़ेरॉक्स करो। इसे रखो और ज़ेरॉक्स करो या चर्च को फेड-एक्स करो। नहीं, इन चीजों को हाथ से ले जाना पड़ता था और हाथ से कॉपी करना पड़ता था। यह एक लंबी प्रक्रिया थी और इसलिए चर्च बहुत सावधान था। और मुझे लगता है कि मैं यही कहना चाहूँगा। चारों ओर प्रसारित की गई पुस्तकों को इकट्ठा करने में समस्या थी।

चर्च संग्रह करने में बहुत सावधान था और यह तय करने में भी बहुत सावधान था कि कौन सी किताबें ईश्वर का वचन मानी जाएँ। क्योंकि वे बहुत सावधान थे, इसलिए इस प्रक्रिया में सैकड़ों साल लग गए। पूरी चीज़ को एक साथ रखने में कुछ समय लगा। इसलिए संग्रह प्रक्रिया में समय लगा और प्रमाणीकरण की आवश्यकता थी, इसलिए इन दस्तावेजों को स्वीकार किए जाने से पहले उन्हें प्रमाणित किया जाना चाहिए। और संग्रह प्रक्रिया में काफी समय लगा।

यू. कैनन—दूसरी - चौथी शताब्दी ई. [38:08-40:01]

यहाँ कुछ बातें हैं और मैं नहीं चाहता कि आप इन बातों को जानें, लेकिन ली मैकडोनाल्ड नाम का एक व्यक्ति था और वह मेरा एक मित्र था, आप BBR या IBR के लोगों को जानते हैं जिन्होंने शोध किया और जिन्होंने न्यू टेस्टामेंट पर कैनोनाइजेशन प्रक्रिया पर 100 पृष्ठ लिखे और कैसे न्यू टेस्टामेंट को प्रारंभिक चर्च के पिताओं सहित एकत्र किया गया और विभिन्न परिषदों और विभिन्न चीजों का वर्णन किया और कैसे उन्होंने कैनन के साथ बातचीत की। इसलिए मैं कैनन पर इस प्रकार की पुस्तकों की सलाह देता हूँ। मुराटोरियन कैनन 1, 2 पीटर और जेम्स और इब्रानियों

को छोड़कर बाकी सब था। तो इसमें नया नियम है। यह लगभग 170 ई. से आता है। तो यह जॉन द्वारा न्यू टेस्टामेंट को समाप्त करने के लगभग 80 साल बाद की बात है, जो कि लगभग 75 साल या उससे भी कम समय में हुआ। 75 साल बाद इसने पूरे न्यू टेस्टामेंट को अपने कब्जे में ले लिया। उनके पास सुलैमान की बुद्धि थी और पीटर की बुद्धि पर द शेफर्ड ऑफ हर्मीस के पास विवाद है, लेकिन कैनन में नहीं है। तो यह मुराटोरियन कैनन था।

आप इसे शुरुआती चर्च के पिताओं में से एक में देख सकते हैं। आप देख सकते हैं कि वह 325 ई. के बारे में लिखने जा रहा है। 325 ई. बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यही वह समय है जब - क्या किसी को 325 ई. और रोमन साम्राज्य याद है? 325 कॉन्स्टेंटाइन की तिथि है। 325 ई. वह समय है जब कॉन्स्टेंटाइन ईसाई बन जाता है। अब अचानक आपको एक सम्राट मिल गया है और आपको रोम में एक व्यक्ति मिल गया है जो रोमन साम्राज्य का मुखिया है और जो ईसाई है। इसलिए अब सब कुछ बदलने जा रहा है, रोमन और ईसाइयों के बीच विरोध या इस तनाव से। अब अचानक आपको एक ईसाई सम्राट मिल गया है। तो यूसेबियस उस समय के आसपास अध्ययन कर रहा है और उसके पास होमोलोगोमेना नामक वह है जहाँ हर कोई सुसमाचार को स्वीकार करता है; अधिनियम, पॉलिन पत्र, 1 पतरस, 1 यूहन्ना और रहस्योद्घाटन।

वी. एंटीलेगोमेना [40:02-46:10]

दूसरा सवाल यह है कि क्या उन्होंने इन बातों को स्वीकार किया और उन्हें वह मिला जिसे आप "एंटीलेगोमेना" कहते हैं। अब एंटीलेगोमेना क्या है? आप में से कुछ ने मुझे पुराने नियम के लिए समझा है और आप महसूस करेंगे कि पुराने नियम में एंटीलेगोमेना वह जगह है जहाँ पुराने नियम में पाँच पुस्तकें हैं जिन पर सवाल उठाए गए थे। "एंटी" का अर्थ है "विरुद्ध" और "लेगोमेना" का अर्थ है "बोलना" या "विरुद्ध बोलना।" ऐसी पुस्तकें थीं जिनके खिलाफ़ बोला गया था। पुराने नियम में पाँच पुस्तकें थीं और वे क्या होंगी? नीतिवचन क्योंकि उत्तर देने वाला मूर्ख नहीं है और अगली आयत में मूर्ख को उत्तर देने वाला है। नीतिवचन 24:5 में मूर्ख को उत्तर देने के लिए कहा गया है। एस्तेर की पुस्तक पर सवाल उठाया गया क्योंकि एस्तेर की पुस्तक में ईश्वर का नाम नहीं आता है। अन्य कौन सी पुस्तकें हैं? सोलोमन का गीत, यौन कारणों से शुरुआती पुस्तकें थीं और

यहूदियों को नहीं पता था कि चीजों के यौन पहलुओं के साथ क्या करना है। यहजेकेल की पुस्तक पर सवाल उठाया गया क्योंकि मंदिर का पहाड़ जिसका वर्णन किया गया था वह बहुत बड़ा था। और फिर, बेशक, सभोपदेशक एक और था। सभोपदेशक "व्यर्थ की व्यर्थता, सब व्यर्थ है", मुझे पता है कि आपने इसे सुना होगा। यह एक बहुत ही निराशावादी पुस्तक है, हालांकि कुछ लोग इसे बिल्कुल भी निराशावादी नहीं मानते हैं। यह बड़े सवाल पूछता है लेकिन आपको जवाब नहीं देता। खैर, चलिए वहाँ से बाहर निकलते हैं। तो ये पुराने नियम के एंटीलेगोमेना हैं।

नए नियम में पुस्तकों की एक श्रृंखला भी है जो एंटीलेगोमेना है - ऐसी पुस्तकें जिनके खिलाफ़ बोला जाता है और जिन पर सवाल उठाए जाते हैं। उनमें से एक है जेम्स। जेम्स पर सवाल क्यों उठाए जाएँगे? क्योंकि आप पॉल को पढ़ने के बाद जेम्स को पढ़ते हैं। तो आप रोमियों और कुरिन्थियों और कुलुस्सियों और इफिसियों को पढ़ते हैं। आप पॉल की सभी भावनाओं को पढ़ते हैं और फिर आप जेम्स के पास आते हैं। जब आप जेम्स तक पहुँचते हैं, तो आप क्या सोचना शुरू कर देते हैं? विश्वास और फिर आप काम नहीं करते क्योंकि तब आप घमंड करेंगे। तो फिर जेम्स आता है और कहता है कि काम के बिना विश्वास मृत है। तो फिर यह हास्यास्पद लगता है। तो फिर जेम्स और पॉल के बीच यह तनाव है और इसलिए जेम्स पर सवाल उठाए गए। जूड एक बहुत ही अजीब किताब है। यह माइकल और स्वर्गदूतों के बारे में बात करती है। जूड की किताब में अजीब बातें हैं। जूड शायद यीशु का भाई था और यह 2 पतरस के समानांतर भी है। तो जूड और 2 पतरस भी बहुत समान किताबें हैं और वास्तव में 2 पतरस 2 और जूड के बीच शब्दशः समानताएँ मौजूद हैं। इसलिए कुछ लोग कहते हैं कि आपको वास्तव में यहूदा की पुस्तक की आवश्यकता नहीं है, लेकिन आपके पास 2 पतरस की पुस्तक है जिसमें यहूदा अंतर्निहित है। 2 और 3 यूहन्ना सिर्फ छोटी किताबें हैं और कुछ ने प्रासंगिकता और स्थितियों के संबंध में प्रश्न उठाए हैं जो प्रासंगिक नहीं हो सकते हैं। अस्वीकार की गई पुस्तकें; बरनबास का पत्र, हर्मिस का शेपर्ड, पीटर का सर्वनाश और अन्य पुस्तकों को अस्वीकार कर दिया गया था, लेकिन उनमें से कुछ का उत्तर दिया गया है और उनमें से कुछ 325 में हैं। एक और है, इन सभी चीजों को उस पर डालने के लिए क्षमा करें। स्पष्ट रूप से, मुझे पृष्ठभूमि सेट करने के लिए बस इसका वर्णन करने दें। चूंकि आप सिनाईटिकस की पांडुलिपि

की तलाश कर रहे हैं, सिनार्इटिकस में सबसे अच्छा नया नियम है। सबसे पुरानी और सबसे अच्छी पांडुलिपियों में से एक सिनार्इटिकस है और इसमें पूरा नया नियम है। पत्रों को इस तरह क्यों रखा गया है कि रोमियों को पहले और 1 कुरिन्थियों को दूसरे स्थान पर रखा गया है। और गलातियों, फिलिपियों, कुलुस्सियों को ऐसा लगता है कि पत्रों को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित नहीं किया गया है। रोमियों को पहला पत्र नहीं था। यह संभवतः थिस्सलुनीकियों या गलातियों को पहले स्थान पर रखा गया था। रोमियों को क्यों और 1 कुरिन्थियों को क्यों ? हम जानते हैं कि 1 और 2 कुरिन्थियों को पहले स्थान पर नहीं रखा गया था। मूल रूप से, बड़े अक्षरों को पहले रखा गया था। रोमियों और कुरिन्थियों को पहले रखा गया क्योंकि वे बड़े थे। इसलिए ऐसा लगता है कि पॉलिन संग्रह के क्रम में आकार का विचार किया गया था, चाहे आप मानें या न मानें। इसलिए पॉल के पत्र वहाँ थे। "कैथोलिक पत्र" आम तौर पर पॉल द्वारा नहीं लिखी गई पुस्तकें थीं। रहस्योद्घाटन की पुस्तक , निश्चित रूप से, अंतिम स्थान पर आएगी क्योंकि यह दुनिया के अंत के बारे में एक सर्वनाश है। इसलिए यह नए नियम के अंत के बारे में एक अच्छा निष्कर्ष है।

बहुत कम लोगों ने पूरा नया नियम देखा होगा। बहुत कम लोगों ने पूरा नया नियम देखा होगा। चर्च के लिए प्रारंभिक परिषद- एक पूर्व बनाम एक पश्चिम है। पूर्वी चर्च बनाम पश्चिमी चर्च आज भी देखा जाता है। पूर्व और पश्चिम के बीच कुछ भिन्नता थी। 397 ई. में कार्थेज की परिषद ने एक नया नियम स्थापित किया जो ये पुस्तकें हैं। तो आपके पास नए नियम की 27 पुस्तकें हैं। तो हम जानते हैं कि 397 तक हमारे पास एक खाता है जो कहता है कि ये पुस्तकें सख्ती से नए नियम का कैनन हैं। तो यह 397 तक है।

हम देखते हैं कि शुरू से ही संग्रह थे - पॉल के संग्रह... यहाँ-वहाँ थोड़ा बहुत। चर्चों ने शुरू से ही इसे एक साथ रखा। लेकिन वास्तव में उन्होंने 397 में सभी को एक साथ रखा था। 367 में चर्च के एक पिता अथानासियस। अथानासियस एक शुरुआती चर्च के पिता थे। उन्होंने नए नियम की 27 पुस्तकों को सूचीबद्ध किया। तो 367 तक, आप जानते हैं कि आप कुछ सौ साल की बात कर रहे हैं और नए नियम के लिखे जाने के 50 साल बाद, यह सब एक साथ है। फिर से उन पुस्तकों को इकट्ठा करने और प्रसारित करने में बहुत समय लगेगा। तो यह एक तरह की प्रक्रिया है कि कैसे

चीजें एक साथ आईं। उन्होंने समय के साथ विभिन्न पुस्तकों को एकत्र किया। यह दर्शाता है कि चर्च सावधान था। यह दर्शाता है कि चर्च इस बात को लेकर सावधान था कि उन्होंने पुस्तकों का चयन कैसे किया और समय के साथ उन्हें कैसे स्वीकृत किया और उनका प्रसार किया।

डब्ल्यू. पांडुलिपियाँ [46:10-48:54]

ई. पाठ प्रेषण - मौखिक और लिखित

[लघु वीडियो: कम्बाइन WY; 46:10-59:15]

अब हम आगे बढ़ते हैं। ईश्वर इन भविष्यवक्ताओं और प्रेरितों से बात करते हैं और प्रेरित और भविष्यवक्ता इसे लिखते हैं। यही प्रेरणा की प्रक्रिया है। फिर हमने विभिन्न पत्रों को एकत्रित किया, जो कि विहितीकरण की प्रक्रिया है "उन्हें एक साथ लाना।" कौन से ईश्वर द्वारा प्रेरित हैं? कौन से ईश्वर के वचन के रूप में स्वीकार किए जाते हैं? कौन से नहीं? और इसलिए कौन से एकत्रित किए जाते हैं और कौन से नहीं। कौन से अस्वीकार किए जाते हैं? अब जब हमने उन सभी 27 को एकत्रित कर लिया है, तो हमें 2,000 वर्षों तक बार-बार उनकी प्रतिलिपि बनानी होगी। वर्तमान तक उनकी प्रतिलिपि बनाई जानी है। अब पांडुलिपियों की प्रतिलिपि बनाने की प्रक्रिया और दुनिया भर में उनकी प्रतिलिपि बनाने की प्रक्रिया हम देखते हैं कि पांडुलिपियाँ अभी मिल रही हैं।

पांडुलिपियाँ अभी भी मिल रही हैं। मेरे एक मित्र हैं जिनके साथ मैं पढ़ाता था, उनका नाम डॉ. डैन वालेस था। डॉ. डैन वालेस उन सबसे प्रखर विद्वानों में से एक हैं जिनके साथ मुझे पढ़ाने का सौभाग्य मिला है। बहुत ही प्रखर व्यक्ति। उन्हें ग्रीक पांडुलिपियों में बहुत रुचि है। मैंने आपको बताया कि अब वे ग्रीक दाढ़ी बढ़ा रहे हैं। और इस्तांबुल में उन्हें पता चला कि अभी एक ग्रीक पांडुलिपि है, मैं 2011 या 2012 की बात कर रहा हूँ। वे इस्तांबुल जाकर इस पांडुलिपि को दुनिया के सामने प्रकाशित करना चाहते थे और इसलिए वे आज भी पांडुलिपियाँ ढूँढ़ रहे हैं। डैन उस पांडुलिपि की तलाश में हैं और मुझे आश्चर्य है कि क्या उन्हें अब तक वह पांडुलिपि मिल गई है, जब आप विभिन्न पांडुलिपियों की तुलना करते हैं तो पांडुलिपियों में अंतर होता है। ब्रूस मेटज़गर प्रिंसटन जैसे कुछ लोग मूल के सटीक सही पाठ को निर्धारित करने के लिए अपनी पूरी ज़िंदगी पांडुलिपियों को पढ़ने में बिता देंगे क्योंकि हमारे पास ऐसी कई अलग-अलग पांडुलिपियाँ हैं जिन्हें सहसंबंधित

करने की आवश्यकता है। इसलिए वे इन पांडुलिपियों को आपस में जोड़ते हैं जिन्हें अब पाया गया है और जिन्हें एक साथ रखा गया है। ये विद्वान उनका अध्ययन करेंगे और उन्हें एक साथ रखेंगे।

तो बाइबिल की नकल, मुझे ईसाई शास्त्रियों के बारे में तथ्य का उल्लेख करना चाहिए; ईसाई शास्त्रियों बनाम यहूदी शास्त्रियों। यहूदी शास्त्रियों ने उत्कृष्ट काम किया। यहूदी शास्त्रियों ने परमेश्वर के वचन की नकल की। उनके पास गुणवत्ता नियंत्रण प्रक्रियाएँ थीं, उदाहरण के लिए वे एक दस्तावेज़ को पढ़ते थे और वे सभी अक्षर "ए" का पालन करते थे। तो इस पृष्ठ पर उस पृष्ठ पर 27 ए होने चाहिए थे। यदि आपके पास पृष्ठ पर 27 ए नहीं हैं, तो आपको अपनी पांडुलिपि को फाड़ना होगा। तो ये लोग वास्तव में सावधान थे। शास्त्रों की नकल करने वाले यहूदी शास्त्र पेशेवर थे। वे पेशेवर रूप से प्रशिक्षित थे और उनके पास जाँच और संतुलन और प्रूफ रीडिंग और आपके पढ़ने को संतुलित करने के लिए सावधानीपूर्वक प्रक्रियाएँ थीं ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि यह बिल्कुल सही है और यह पूरी तरह से किया गया है।

X. ईसाई शास्त्री [48:54-50:34]

दूसरी ओर, ईमानदारी से कहें तो, आरंभिक ईसाइयों के साथ क्या समस्या थी? 1) ईसाइयों को शास्त्रियों की तरह प्रशिक्षित नहीं किया गया था। अधिकांश ईसाई क्या थे? उनमें से अधिकांश प्रेरित या मछुआरे थे। ये लोग प्रशिक्षित शास्त्री नहीं थे। वे मछुआरे और कर संग्रहकर्ता थे। इसलिए आरंभिक ईसाइयों को पेशेवर शास्त्रियों के रूप में प्रशिक्षित नहीं किया गया था। साथ ही, आरंभिक ईसाइयों में से अधिकांश गरीब थे। जब कोई व्यक्ति गरीब होता है, तो आपको भोजन की चिंता करनी पड़ती है। आपको चीजों की नकल करने और शास्त्र संबंधी तकनीकों की चिंता नहीं होती। इसलिए वे गरीब थे और शायद सबसे विनाशकारी बात यह थी कि उन्हें सबसे अधिक निर्धारित किया गया था। ईसाइयों को बहुत ही स्थानीय संदर्भों में जगह-जगह सताया गया था। जब आपको सताया जाता है और आपको एक जगह से दूसरी जगह भागना पड़ता है तो आप अच्छी पांडुलिपियाँ और चीजें नहीं बना सकते। इसलिए ऐसी कई चीजें थीं जो ईसाइयों के अच्छे शास्त्री बनने और अच्छी पांडुलिपियाँ बनाने के खिलाफ़ काम करती थीं। इसलिए ईसाई शास्त्रियों और यहूदी शास्त्रियों के बीच एक बड़ा अंतर है और आपको इसके बारे में पता होना चाहिए।

वैसे पुराने नियम में राजा को कानून की नकल करने का आदेश दिया गया था। इस्राएल के राजा को एक व्यक्तिगत प्रतिलिपि बनाने का आदेश दिया गया था। उसे खुद कानून की व्यक्तिगत रूप से नकल करनी थी। यहूदी पर्व पर वे यहूदी पर्व की विभिन्न चीजों को पढ़ते थे और पवित्रशास्त्र पढ़ने में बहुत रुचि रखते थे। यह उल्लेख किया गया था कि इन चीजों को सार्वजनिक रूप से पढ़ा जाना चाहिए और साझा किया जाना चाहिए और ईसाई शास्त्रियों को पता होना चाहिए।

Y. लिखित बनाम मौखिक [50:34-59:15]

अब लिखित अभिलेखों और मौखिक अभिलेखों में अंतर है। क्या यीशु ने कभी कुछ लिखा था? हमारे पास यीशु के उपदेश हैं। हमारे पास पहाड़ी उपदेश हैं। हमारे पास जैतून पर्वत पर प्रवचन और विभिन्न उपदेश हैं जो यीशु ने दिए, अगर आप इसके बारे में सोचें, तो सिनॉटिक समस्या के लिए पृष्ठभूमि तैयार करने के लिए, जब यीशु ने उपदेश दिया तो वह एक स्थान से दूसरे स्थान पर गया। वह कोराज़ीन से बेथेस्टा, कफरनहूम से नासरत गया और फिर वे यरूशलेम चले गए। क्या यीशु ने कभी एक ही उपदेश दो बार दिया? सबसे अधिक संभावना है कि उसने दिया था। तो वह एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाता था। शिष्यों ने तीन या चार अलग-अलग बार उपदेश सुने।

मुझे पता है कि मेरी पहली नौकरी ब्रिस्टल, टेनेसी में ग्राहम बाइबल कॉलेज में बाइबल पढ़ाना था। हम टेनेसी में हैं और जब मैं वहाँ था तो मैं उस समय ज़्यादा पैसे नहीं कमा पाता था और इसलिए मैं इस बाइबल कॉलेज में शास्त्र पढ़ा रहा था और इसलिए अपनी ज़रूरतें पूरी करने के लिए, मेरी एक युवा पत्नी थी जिसका मुझे भरण-पोषण करना था और हमारे पास एक ट्रेलर था और हम कुछ लोगों के मवेशियों की देखभाल कर रहे थे जिसकी वजह से मैं इस ट्रेलर में लगभग मुफ्त में रह सकता था।

कई लोग हमारी मदद कर रहे थे। मैं एक सर्किट राइडर प्रचारक था, और इसलिए मैं पाँच अलग-अलग चर्चों में जाता था और मैं एक में प्रचार करता था, अगले में, 5 सप्ताह तक। मैं पाँच चर्चों में जाता और फिर से सब कुछ शुरू करता। यह एक तरह से दिलचस्प था। जब मैं ऐसा करता, तो मैं हर चर्च में एक ही उपदेश देता, और मेरी पत्नी हमेशा कहती कि जब आपने पहली

बार उपदेश दिया तो यह भयानक था; वह मेरे साथ ईमानदार है। फिर दूसरी बार यह बहुत बेहतर था, तीसरी बार, उसने कहा कि तीसरी बार सबसे अच्छा था। उसने कहा कि पाँचवीं बार तक मैं बता सकता हूँ कि आप अपने स्वयं के उपदेश से ऊब गए हैं। निस्संदेह यीशु ने एक ही उपदेश को कई बार, या कम से कम इसके विभिन्न पहलुओं को प्रचारित किया। हमें गॉर्डन कॉलेज में डॉ. ग्राहम बर्ड नाम का एक लड़का मिला, जो जैज़ पियानो बजाता है, साथ ही वह क्लासिक्स में प्रशिक्षित है। वह एक ही गाना बजाता था; एक बार वह इसे शास्त्रीय संगीत की तरह बजाएगा और शास्त्रीय तरीके से बजाया जाएगा, और फिर अचानक वह तय करेगा कि ठीक है, मैं फिर से वही गाना बजाने जा रहा हूँ, बस अब वह इसे जैज़ की तरह बजाएगा। वह वही गाना बजाता है, लेकिन अब यह जैज़ की तरह लगता है। फिर वह वही गाना लेगा, वह फिर से बंद करेगा और फिर से शुरू करेगा और अब वह इसे गॉस्पेल धुन की तरह बजाएगा। तो क्या होता है कि यह सब एक ही गाना है, लेकिन यह अलग-अलग तरीकों से अलग-अलग लगता है। वह कैसे बजाता है, यह आपको बताता है कि उसके साथ कौन-कौन से दर्शक हैं। अगर उसके पास शास्त्रीय दर्शक हैं, तो वह शास्त्रीय बजाता है। अगर उसके पास गॉस्पेल दर्शक हैं, तो वह गॉस्पेल बजाता है। तो वह वही चीज़ लेकर उसके साथ जैज़ करने में सक्षम है। मुझे वह रूपक पसंद है क्योंकि मुझे लगता है कि यीशु ने शायद यही किया होगा जब वह एक जगह से दूसरी जगह गया था। दर्शकों के आधार पर वह अलग-अलग तरीके से बोलता था। कई बार यह एक ही विषय-वस्तु होती थी, लेकिन दर्शकों की ज़रूरतों के अनुसार अलग-अलग रूप और आकार में। इसलिए मुझे लगता है कि जब आप सुसमाचारों में जाते हैं तो मसीह के कुछ उपदेशों में उनके कथनों में भिन्नताएँ होंगी क्योंकि मुझे लगता है कि उन्होंने एक ही बात को कई बार विभिन्न स्थानों पर प्रचारित किया। मौखिक बनाम लिखित की बात करें तो यीशु ने सुकरात की तरह ही बात की। क्या आपको सुकरात याद है? सुकरात ने कुछ भी नहीं लिखा। सुकरात एक शिक्षक थे, यह प्लेटो था जो उनके छात्र थे जिन्होंने इसे लिखा और इससे सुकरात की बड़ी समस्या उत्पन्न होती है कि इसमें से कितना हिस्सा प्लेटो ने सुकरात में अपने विचारों को पढ़ा। वास्तव में सुकरात का कितना हिस्सा है? हम भाग्यशाली हैं कि हमारे पास ईश्वर का वचन है। इसलिए हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि यह ईश्वर से है। प्लेटो और फिर अरस्तू, एक पीढ़ी बाद हमें सुकरात से प्लेटो और फिर अरस्तू तक ले जाते हैं। हमारे पास यीशु

और प्रेरितों द्वारा इसे लिखा गया है। लेकिन यह मौखिक रूप से शुरू हुआ और यीशु उपदेश देने जा रहे थे। जब यीशु अपने श्रोताओं से बात करते थे तो बहुत कुछ शुरू में लिखा नहीं जाता था। क्या यीशु ने कुछ लिखा था? इसका उत्तर है “नहीं।” उनके प्रेरितों ने ही इसे लिखा था। यीशु ने पहाड़ी उपदेश और जैतून पर्वत पर प्रवचन (मत्ती 24-25) जैसी कहानियाँ सुनाईं जिन्हें उनके अनुयायियों ने याद रखा।

अब यह हमारी संस्कृति और उनकी संस्कृति के बीच अंतर करना महत्वपूर्ण है, यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण अंतर है। हमारी संस्कृति में जब आप कुछ सुनते हैं तो क्या आपको वह याद रहता है? हमारी संस्कृति में इसका उत्तर "नहीं" है। हम हर दिन सैकड़ों चीजें सुनते हैं। यह एक कान से अंदर जाता है और दूसरी तरफ से बाहर आता है और हमें याद नहीं रहता कि हमने क्या सुना क्योंकि हम अपनी संस्कृति में चीजों को बहुत अच्छी तरह से याद नहीं रखते हैं। उस समय उनकी संस्कृति में लोगों को एक बार सुनकर याद रखने के लिए प्रशिक्षित किया जाता था और इसलिए गेरहार्डसन नामक एक व्यक्ति द्वारा लिखी गई *मेमोरी एंड मैनुस्क्रिप्ट नामक एक पुस्तक है*, मुझे याद है कि मैंने इसे पढ़ा था, यह बताता है कि प्राचीन संस्कृतियों में एक व्यक्ति एक धर्मोपदेश देता था और आपके पास एक ऐसा व्यक्ति होता था जो इसे लगभग शब्दशः याद रख सकता था और उसे वापस सुना सकता था। इसलिए उन्होंने खुद को प्रशिक्षित किया और अपने दिमाग को ऑडियो को याद रखने के लिए अनुशासित किया। इसलिए मुझे याद है, प्राचीन मिस्र में एक लेखक नहीं चाहता था कि उसके बच्चे लिखना सीखें क्योंकि उसका कहना था कि अगर वे पढ़ना और लिखना सीख गए तो वे जो सुनते हैं उसे याद नहीं रख पाएंगे। वैसे, क्या यह सच है? मुझे लगता है कि आज यही हुआ है कि लोग बस वही लिखते हैं जो उन्हें याद रखना चाहिए और इसलिए प्राचीन काल के मिस्र के लेखक ऐसा नहीं करना चाहते थे क्योंकि उन्होंने कहा कि वे भूलना सीख जाएंगे। मैंने मिशिगन सिटी, इंडियाना में अधिकतम सुरक्षा जेल में शायद एक दशक तक पढ़ाया और वहाँ प्रोबो नाम का एक साथी था, और प्रोबो एक अद्भुत व्यक्ति था। वह वियतनाम का एक अनुभवी सैनिक था। उसे DMZ के पीछे रखा गया था। उनके पास एक चीज़ थी जिसे विसैन्यीकृत क्षेत्र कहा जाता था। उसे विसैन्यीकृत क्षेत्र के पीछे छोड़ दिया जाता था और उसे कोई हथियार नहीं दिया जाता

था। उसे वहाँ एक चाकू और उसके घातक हाथों के साथ छोड़ा जाता था। उन्हें हथियार नहीं चाहिए था क्योंकि अगर वह बंदूक चलाता तो आवाज़ होती और फिर उन्हें पता चल जाता कि वह वहाँ है और वह जो कर रहा था वह अवैध माना जाता था क्योंकि वह विसैन्यीकृत क्षेत्र के पीछे था। इसलिए उसे दुश्मन की रेखाओं के पीछे छोड़ दिया गया और फिर वह बस अपने हाथों और चाकू का इस्तेमाल करता और अपना काम करता। प्रोबो मेरी कक्षा में था। वह उस समय एक भारतीय था, वह ईसाई नहीं था। वह हमेशा क्लास में मुझसे बहस करता था, यह वाकई बहुत बढ़िया था, मुझे यह बहुत पसंद था, वह शायद मुझसे 3 या 4 या 5 साल बड़ा है। और इसलिए हमारे बीच कुछ बेहतरीन बहसें हुईं, मैंने देखा कि वह ओल्ड टेस्टामेंट ले रहा था और उसने क्लास में कभी कोई नोट नहीं लिया। मैंने सोचा, ठीक है प्रोबो, तुम सोचते हो कि तुम बहुत अच्छे हो, और हम यह पहली परीक्षा देते हैं और तुम इस परीक्षा में असफल हो जाओगे।" खैर, मैंने पहली परीक्षा दी और प्रोबो ने उस क्लास में सभी से सबसे ज़्यादा अंक प्राप्त किए। इसलिए मैं उसके पास गया और मैंने कहा, "तुमने इस क्लास में कोई नोट नहीं लिया, तुम ऐसा कैसे कर सकते हो?" और मुझे पता था कि वह धोखा नहीं देता, वह इससे ऊपर है, वह ऐसा कभी नहीं करेगा। क्या हुआ? उसने कहा कि वह प्रशिक्षित था, उसके पास एक फोटोग्राफिक कान था, वह याद रख सकता था कि क्या कहा गया था क्योंकि उसने कहा कि सेना में उन्होंने उसे प्रशिक्षित किया था। उसे आदेश मिलते थे, आदेश लिखे नहीं जाते थे, आदेश इस रेडियो ट्रांसमीटर के माध्यम से मौखिक होते थे, और उसे ठीक वही याद रखना होता था जो उसे आदेश दिया गया था। इसलिए उसने खुद को याद रखने के लिए प्रशिक्षित किया था, वह मेरे द्वारा दिए गए कुछ व्याख्यानों को शब्दशः उद्धृत कर सकता था, जब मुझे यह भी याद नहीं था कि मैंने क्या कहा था। वह इसे शब्दशः याद रख सकता था क्योंकि उसने खुद को प्रशिक्षित किया था। मैं जो सुझाव दे रहा हूँ वह यह है कि गेरहार्डसन की पुस्तक *मेमोरी एंड मैनुस्क्रिप्ट्स में लोगों ने* दिखाया कि प्राचीन दुनिया के कई लोगों को जो उन्होंने सुना था उसे याद रखने के लिए प्रशिक्षित किया गया था। तो यह उस समय बहुत हद तक मौखिक संस्कृति थी। वाल्टर ओंग और अन्य लोग एक तरह का आधुनिक मीडिया बना रहे हैं कि कैसे मौखिकता अब एक तरह की द्वितीयक मौखिकता में वापस आ रही है। लोग किताबों से दूर डिजिटल दुनिया की ओर बढ़ रहे हैं। तो वैसे भी, बस वापस लौटते हुए यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यीशु मौखिक थे,

यीशु ने मौखिक तरीके से शिक्षा दी। मौखिक माध्यम लिखित माध्यम से अलग होता है। आपको यह याद रखना होगा कि यहाँ आपको जो वीडियो माध्यम मिल रहा है वह भी लिखित माध्यम से अलग है।

Z. लिपिक और पांडुलिपियाँ: मिनिस्क्यूल्स, अन्सियल्स और पपीराई [59:15-68:26]

एफ. लेखक और पांडुलिपियाँ

[लघु वीडियो; Z-AB संयुक्त; 59:15-75:02]

अब हम शास्त्रियों और पांडुलिपियों पर चलते हैं। यहाँ मूल रूप से पांडुलिपियाँ हैं, और वे तीन अलग-अलग प्रकार की पांडुलिपियों में आती हैं, ठीक है, इसलिए जब हम देखते हैं और हम प्राचीन काल से दुनिया भर से नए नियम की पांडुलिपियाँ एकत्र करते हैं। वे तीन प्रकार की पांडुलिपियों में आती हैं। सबसे पहले, आपके पास मिनिस्क्यूल है। मिनिस्क्यूल (मिनीस्क्यूल, "मिनी" का अर्थ है छोटा, "स्क्यूल्स" का अर्थ है लेखन), इसलिए माइनस्क्यूल एक तरह से कर्सिव जैसा है। जब आप कक्षा में नोट्स लेते हैं तो आप कर्सिव लिखते हैं। यह कर्सिव, स्क्रिबल स्क्रिप्ट, कर्सिव राइटिंग की तरह, लोअरकेस कर्सिव राइटिंग है। ये मिनिस्क्यूल लगभग 500 ईस्वी पूर्व के हैं, उनमें से बहुत से लगभग 1000 ईस्वी पूर्व के हैं, इसलिए यह ईसा के हजार साल बाद की बात है। वे ग्रीक पांडुलिपियाँ लिख रहे हैं, शास्त्री ग्रीक पांडुलिपियों की नकल कर रहे हैं, माइनस्क्यूल में, और इनकी संख्या हज़ारों में है। आप देख सकते हैं कि उन्होंने किस तरह की संख्या प्रणाली का इस्तेमाल किया जैसे कि 1099, 1087 या 2300, और इसलिए वे उन्हें एक संख्या देते हैं। इसलिए, प्रत्येक माइनस्क्यूल को एक संख्या दी गई है। इनमें से लगभग 2800 हैं, ठीक है, और उनमें से हज़ारों हैं। अब माइनस्क्यूल नवीनतम हैं, वे 1000 ईस्वी से आते हैं, और उन्हें नवीनतम रूप से कॉपी किया गया था।

अब, क्या हुआ कि उन्हें एक और बैच मिला है, लगभग 300 ऐसी ही अन्सियल पांडुलिपियाँ। अन्सियल पांडुलिपियाँ बड़े अक्षरों वाली पांडुलिपियाँ हैं। ये बड़े अक्षरों वाली पांडुलिपियाँ हैं, और यहाँ यह "A" होगा, आप देख सकते हैं कि वे उन्हें कैसे प्रतीक देते हैं, वे इसे कोई संख्या नहीं देते

क्योंकि वहाँ केवल, “A” एलेक्ज़ेंड्रियानस जैसा होगा, “b” वेटिकनस होगा, एलेक्ज़ेंड्रियानस संभवतः कहाँ पाया गया था? वेटिकनस रोम में वेटिकन से निकला है। यहाँ यह सिनाईटिकस है क्योंकि यह सिनाई से निकला है, इसे एक हिब्रू अक्षर, एलेफ़ दिया गया है। यह माउंट सिनाई से है, बहुत पहले जब यह पाया गया था, यह वास्तव में 19^{वीं} शताब्दी के अंत में पाया गया था, मुझे लगता है कि लगभग 1865 या ऐसा ही था। यह “D” पाया गया था और इसलिए वे इसे इस तरह से बनाते हैं। अनसियल पांडुलिपियाँ 300-500 ईस्वी से आती हैं। इसलिए अनसियल पांडुलिपियाँ पहले की हैं और तब की छोटी पांडुलिपियों से बेहतर हैं। वैसे, क्या आप तुरंत बता सकते हैं कि माइनसक्यूल और अनसियल में क्या अंतर है? अनसियल सभी बड़े अक्षर होंगे। वैसे, दूसरी बात बहुत दिलचस्प है। अनसियल पांडुलिपियों में, शब्दों के बीच कोई रिक्त स्थान नहीं है, इसलिए सभी शब्दों को एक के बाद एक रखा गया है, शब्दों के बीच कोई रिक्त स्थान नहीं है। क्या इसे पढ़ना मुश्किल होगा? और इसलिए लोग शब्दों को विभाजित करके समस्याएँ बनाते हैं। माइनसक्यूल और अनसियल, ये हमारी सबसे अच्छी पांडुलिपियाँ हैं। यह आज सिनैटिकस है, एलेक्ज़ेंड्रिनस, ये हमारी सबसे अच्छी पांडुलिपियाँ हैं। यह मूल रूप से वही है जो न्यू टेस्टामेंट अनसियल पांडुलिपियों पर आधारित है। वे 19^{वीं} शताब्दी तक, 1800 के दशक तक नहीं पाए गए थे।

अब पपीरी लेखन की कोई शैली नहीं है, यह उस प्रकार की सामग्री है जिस पर इसे लिखा जाता है। बहुत सारे अनसियल जानवरों की खाल पर लिखे जाते थे जिन्हें वेल्लम कहा जाता था, जानवरों की खाल हाथ के चमड़े पर, वे चमड़े पर लिखते थे। पपीरी मूल रूप से एक ऐसी सामग्री है जो बैल-रश बांस के संयोजन की तरह है। यह काफी लंबा होता है, और वे रेशों को इधर-उधर धकेलते हैं, और वे उन्हें एक साथ धकेलकर कागज बनाते हैं, और वे एक प्रकार का कागज बनाते हैं जिसे पपीरस कहा जाता है। अब समस्या यह है कि चूंकि यह कार्बनिक पदार्थ से बना है, इसलिए यह टूट जाता है। इसलिए अन्य सभी संस्कृतियों में पपीरस बहुत लंबे समय तक नहीं टिकता है, कुछ सौ साल और हवा में नमी, आर्द्रता, इसे नष्ट कर देती है। लेकिन मिस्र में, मिस्र इतना सूखा है कि पपीरस टिक गया है। और इसलिए हमें पपीरस मिल गया है, और वे इसे P52, P46 जैसे नंबर देते हैं, और लगभग 96 का संग्रह है, वास्तव में इन पपीरस के टुकड़ों के कई, कई और टुकड़े हैं,

और समस्या यह है कि पपीरस टूट जाता है। यह वास्तव में भंगुर है। कल्पना कीजिए कि 200 साल बाद यह कार्बनिक पदार्थ पर लिखा गया है। यह बहुत ही भंगुर है, और बस टूट जाता है। कोई इसे उठाता है और यह उसके हाथों में टूट जाता है, लेकिन तारीख 120 से 300 ईस्वी है, और यह वास्तव में दिलचस्प क्यों है क्योंकि P52 जैसी कुछ शुरुआती पांडुलिपियाँ लगभग 120-125 ईस्वी की हैं। यह जॉन के रहने के 30 साल के भीतर है। P52 में, हमारे पास जॉन अध्याय 18 पर मिस्र से एक दस्तावेज है, जिसे उन्हें इफिसुस से लाना पड़ा था जो संभवतः सबसे अधिक संभावना है कि जॉन जॉन के रहने से 30 साल पहले मिस्र में था। हमें नये नियम का एक अंश मिलता है, यूहन्ना के जीवनकाल के 30 वर्षों के भीतर हमें यूहन्ना अध्याय 18 का एक अंश मिलता है।

तो प्रिंसटन में ब्रूस मेटज़गर जैसा व्यक्ति क्या करता है? वह एक संपादक है, वह इन सभी पांडुलिपियों को लेता है, और उसे उनका वजन करना होता है: कौन सी पांडुलिपियाँ सबसे महत्वपूर्ण मानी जाएँगी? आपके पास एक पपीरस है, आप देखते हैं कि यह कितनी पुरानी है? यह कुछ अच्छा डेटा है, आप इसे देखते हैं, आपके पास चीजों की एक पूरी किताब है, जो छोटी-छोटी चीजें हैं वे बाद की हैं, और इसलिए उन्हें उतना वजन नहीं दिया जा सकता है। तो अब, यहाँ एक तस्वीर है, यह P52 की तस्वीर है, जॉन अध्याय 18 श्लोक 31 से 33 की बहुत ही दिलचस्प तस्वीर है। आप देख सकते हैं कि यह खंडित है, आप देखते हैं कि यह कैसे टूटा हुआ है? यह सिर्फ सामग्री की प्रकृति के कारण है, आप वास्तव में पपीरस पौधे की पसलियों के मौखिक किस्में देख सकते हैं, आप पौधे की पसलियों को यहाँ जाते हुए देख सकते हैं। इस पेपर में आप ग्रीक अक्षर भी देख सकते हैं जो वहाँ लिखे हैं और वास्तव में, मैं शब्द देख सकता हूँ, मुझे लगता है कि यह "काई" है, देखें कि यह हिब्रू या ग्रीक शब्दों में शब्द है, "काई" शब्द का अर्थ है "और।" तो यह मूल रूप से जॉन अध्याय 18 बनाम 31 का एक अंश है। P52 जैसा कि वे इसे कहते हैं। यह मिस्र में नीचे से आता है, इसलिए इसे भूमध्य सागर को पार करके, जॉन के रहने के 30 वर्षों में मिस्र में जाना पड़ा। यह वास्तव में आश्चर्यजनक था। अब यहाँ कोडेक्स सिनैटिकस है। अब यह बहुत दिलचस्प है। यह सिनैटिकस एक बग पांडुलिपि है। यह माउंट सिनाई से आया था। टिर्सेडॉर्फ नाम का एक आदमी था जो सिनाई गया था, मुझे लगता है कि यह लगभग 1865 का ठिकाना है, कहीं 1800 के दशक में।

और टिंशेंडॉर्फ के वहाँ कई बार जाने के कुछ समय बाद, उसने इस पांडुलिपि को प्राप्त करने की कोशिश की। उन्होंने वास्तव में दावा किया कि भिक्षु पांडुलिपियों को फाड़ रहे थे और इसे कूड़ेदान में फेंक रहे थे और गर्म रहने के लिए इसे जला रहे थे, और इसलिए उन्होंने इस पांडुलिपि को बचाया। अन्य लोगों का कहना है कि उन्होंने भिक्षुओं से पांडुलिपि चुराई थी। भिक्षु अभी भी सिनाईटिकस को चुराने के लिए उनसे नाराज हैं। उन्होंने जो किया वह यह था कि उन्होंने इसे 1860 के दशक में सिनाई मठ से बाहर निकाला और इसे बाकी दुनिया के सामने लाया। यह बहुत महत्वपूर्ण है। आप जो देख रहे हैं वह यह है कि यह एक असंबद्ध पांडुलिपि है। क्या आप देख सकते हैं कि यह सभी बड़े अक्षरों में है? यह सभी बड़े अक्षर हैं, और शब्दों के बीच कोई स्थान नहीं है। वे सभी एक साथ चलते हैं, लेकिन बड़े अक्षरों में, और यदि आप इसे पढ़ सकते हैं: यहाँ "ईडन" शब्द है जिसका अर्थ है "मैंने देखा" और वह आगे बढ़ता है। आप इसे पढ़ सकते हैं लेकिन आपको पता होना चाहिए कि शब्दों के बीच कोई विभाजन नहीं है और इसलिए जब आप इसे पढ़ने जाते हैं तो आपको इसे अपने दिमाग में तोड़ना होगा। तो यह सिनाईटिकस पांडुलिपियों की एक प्रति है। पपीरस, छोटे-छोटे टुकड़े, आप देख सकते हैं कि वे कैसे एक जैसे हैं, वे कैसे अलग हैं? और इसलिए ब्रूस मेटज़गर जैसे संपादक को यह देखना होगा और कहना होगा, ये इस तरह से एक जैसे हैं, ये सभी इस तरह से एक जैसे हैं, इस पर निर्णय लें कि हमारे लिए अनुवाद करने के लिए मूल ग्रीक पाठ क्या होगा। इसलिए हमें उनका अनुवाद करने के लिए कहा गया। यहाँ सिनाईटिकस का एक विस्तृत विवरण है, और यह यहाँ से शुरू होता है, और फिर "हैगियोस थेटव", और यह प्रभु की प्रार्थना का हिस्सा है: "पैटर हेमोन हो एन टॉस ऑरनोस" और फिर यह प्रभु की प्रार्थना का हिस्सा है, जैसा कि आप देख सकते हैं, सभी शब्द एक साथ चलते हैं, और वे सभी बड़े अक्षर हैं। यह सिग्मा अब एसी जैसा दिखता है, यह उससे थोड़ा अलग है जिसे हम सिग्मा जैसा देखने के आदी थे - उससे अलग प्रतीक, लेकिन सी सिग्मा थे, और फिर यह *काई* है। वैसे भी, यह प्रभु की प्रार्थना का हिस्सा है, आप देख सकते हैं कि सभी शब्द एक साथ चलते हैं, शब्दों के बीच कोई रिक्त स्थान नहीं है। तो यह एक तरह से बढ़िया है।

ए.ए. अन्य यूनानी पांडुलिपियाँ [68:26-73:02]

अब नए नियम में बाहरी स्रोतों की बात करें तो, दुनिया भर से लगभग 5000 अलग-अलग यूनानी पांडुलिपियाँ हैं - माउंट सिनाई से सेंट कैथरीन मठ 1865 में पाया गया था। 125 ई. के आसपास के कुछ पपीरस। तो 125 ई. में हमें पपीरस मिला, पीछे जाकर देखें तो पपीरस को डेइसमैन ने पाया था, और उनमें से कुछ लोगों ने 1890 के आसपास, 1910 के आसपास, 20^{वीं} सदी के मोड़ के आसपास, 1880 से 1920 के बीच पपीरस के साथ बहुत सारा काम किया। दिलचस्प बात यह है कि पपीरस मिलने से पहले, लोगों ने पुराने नियम और सेप्टुआजेंट और नए नियम में ग्रीक को उठाया। वे यह पता नहीं लगा सके कि यह किस प्रकार की ग्रीक थी। वे जानते थे कि यह शास्त्रीय ग्रीक नहीं थी, और इसलिए कुछ लोगों ने सुझाव दिया कि नए नियम और पुराने नियम के सेप्टुआजेंट की ग्रीक को, जैसा कि उन्होंने कहा, पवित्र आत्मा ग्रीक कहा जाता था। यह एक विशेष ग्रीक था जिसे पवित्र आत्मा ने विशेष रूप से सेप्टुआजेंट और नए नियम के लिए डिज़ाइन किया था, इसलिए उन्होंने इसे पवित्र आत्मा ग्रीक कहा। जब डेसमैन और इन लोगों ने 1880 से 1920 के दशक में इन पपीरी को पाया, तो अचानक उन्हें एहसास हुआ कि नया नियम पवित्र आत्मा ग्रीक नहीं है। इस पपीरी पर पवित्र आत्मा के बहुत सारे रोज़मर्रा के दस्तावेज़ थे। तलाक का एक दस्तावेज़, "इस आदमी ने मुझे \$100 का कर्ज दिया था " का एक दस्तावेज़, और बस सड़क पर होने वाली सामान्य बातचीत। उन्होंने जो तय किया वह कोइन ग्रीक था जो कि मुख्य रूप से 300 ईसा पूर्व से 300 ईस्वी तक है, कोइन ग्रीक उस समय की आम भाषा थी। यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण बिंदु लाता है, और मुझे इस बिंदु को अधिक बार कहने की ज़रूरत है: भगवान हमेशा एक ही भाषा बोलते हैं। भगवान कौन सी भाषा बोलते हैं? मैं अपने छात्रों से कहता हूँ, हमें हिब्रू सीखना चाहिए क्योंकि भगवान स्पष्ट रूप से हिब्रू बोलते हैं; उन्होंने आदम को "ए-डैम" कहा जो कि एक हिब्रू नाम है जिसका अर्थ है "धूल", इसलिए उन्होंने आदम को "धूलदार" कहा। क्यों? क्योंकि उसने आदम को *आदम* (*जमीन*) से बनाया। उसने आदम को मिट्टी से बनाया। वह उसे "धूल" कहता है। हिब्रू में, हव्वा का नाम "हवा" है। यह एक हिब्रू नाम है, "सभी जीवित माँ," "जीवित एक," और इसलिए ये हिब्रू नाम हैं। इसलिए जब आप स्वर्ग जाते हैं तो आपको हिब्रू जानना बेहतर होता है क्योंकि अन्यथा आपको स्वर्ग में जाने से पहले दो साल का क्रैश कोर्स करना होगा। आपको हिब्रू जानना होगा इससे पहले कि आप स्वर्ग में प्रवेश कर सकें और उससे बात कर सकें। भगवान कौन

सी भाषा बोलते हैं? जब यहूदी हिब्रू बोलते थे, तो हिब्रू 1800 ईसा पूर्व से चली आ रही कनानी बोली से ज़्यादा कुछ नहीं है। हिब्रू एक कनानी बोली है। जब वे हिब्रू बोलते थे, तो वह उनसे हिब्रू बोलता था। जब यहूदी अरामी भाषा में चले गए, दानिय्येल के समय में, जब वे बेबीलोन गए, तो भगवान ने क्या किया? भगवान ने अरामी भाषा में चले गए, और इसलिए पुराने नियम का कुछ हिस्सा अरामी भाषा में लिखा गया है। जब सिकंदर महान 333 ईसा पूर्व में आया, तो क्या हुआ था? भगवान ने ग्रीक भाषा में चले गए। परमेश्वर हमेशा लोगों की भाषा बोलता है, चाहे वह हिब्रू हो, अरामी हो, या ग्रीक हो। वह हमेशा लोगों की भाषा बोलता है।

आज लोगों की भाषा क्या है? इसीलिए मैं इस डिजिटल सामान पर इतना बड़ा हूँ क्योंकि आज लोगों की भाषा डिजिटल है। मुझे लगता है कि ईसाई होने के नाते हमें डिजिटल का इस्तेमाल ईश्वर की महिमा और दूसरों की भलाई के लिए करना चाहिए। हमें ईश्वर के वचन को इस नई भाषा, डिजिटल भाषा में रखना चाहिए। तो वैसे भी, आपके पास वर्णमाला में 26 अक्षर हैं, डिजिटल वर्णमाला में कितने हैं? डिजिटल वर्णमाला में दो हैं: 0 और 1. उस 0 और 1 के साथ हम अक्षर लिख सकते हैं जैसे आप अपने टेक्स्टिंग में लिखते हैं, हम चित्र लिख सकते हैं जैसे आप अपनी जेपीईजी छवियों में लिखते हैं, आप एमपी3 कर सकते हैं, आप ऑडियो कर सकते हैं, आप इस H.264 mp4 वीडियो की तरह वीडियो बना सकते हैं। 1 और 0 के साथ हम इन सभी माध्यमों का पता लगा सकते हैं और उम्मीद है कि उनका उपयोग ईश्वर के वचन की घोषणा करने के लिए करेंगे।

ए.बी. ग्रीक, लैटिन वुल्फोट, सिरिएक, कॉप्टिक से अनुवाद की तुलना [73:02-75:02]

खैर, ग्रीक पांडुलिपियों पर वापस जाएं तो हमारे पास 5000 ग्रीक पांडुलिपियां हैं और हम इन सभी पांडुलिपियों को एक साथ इकट्ठा करते हैं और उनकी तुलना करते हैं, यह देखने के लिए कि वे कहां असहमत हैं, यह देखने के लिए कि वे एक दूसरे से कहां सहमत हैं, और कुछ तो 125 ई. में, प्रेरितों के 30 वर्ष बाद की हैं।

अब ग्रीक न्यू टेस्टामेंट का अनुवाद लगभग 400 ई. में लैटिन में किया गया था। जब ग्रीक से लैटिन में बदलाव हुआ, तो जेरोम नाम का एक व्यक्ति था, और वह बेथलेहम और अन्य स्थानों पर

था। उसने बाइबल का बड़े पैमाने पर लैटिन में अनुवाद किया। इस लैटिन वुल्फोट का इस्तेमाल तब लगभग 400 से लेकर लगभग 1400, 1500 ई. तक और आज तक 1000 वर्षों तक किया गया, मैंने आज तक भिक्षुओं को लैटिन वुल्फोट का जाप करते सुना है। लैटिन वुल्फोट ने 1000 वर्षों तक शासन किया। हमारे पास लगभग 8000 लैटिन पांडुलिपियाँ हैं। अब हम लैटिन पांडुलिपियों को ग्रीक पांडुलिपियों के साथ जोड़ते हैं। ग्रीक पांडुलिपियाँ पुरानी और अधिक मूल हैं, लेकिन हम लैटिन पांडुलिपियों से भी परामर्श कर सकते हैं। उनमें से 8000 और जेरोम से 400 ई. हैं।

इसके अन्य प्रारंभिक संस्करण भी हैं। कॉप्टिक चर्च वास्तव में आज भी मिस्र में है। आपको पता है कि पिछले एक साल में मिस्र में मुस्लिम ब्रदरहुड द्वारा कॉप्टिक चर्च को जला दिया गया है। यह वास्तव में शर्म की बात है। कॉप्टिक चर्च मिस्र में 1000 से अधिक वर्षों से है। इसलिए हमारे पास न्यू टेस्टामेंट का कॉप्टिक संस्करण है, हमारे पास सीरियाई संस्करण भी है। सीरियाई संस्करण के साथ, अराम या सीरिया से, हम सीरियाई की तुलना कॉप्टिक और ग्रीक से कर सकते हैं जो हमारे पास है। हम सीरियाई की तुलना कर सकते हैं और देख सकते हैं कि यह कहाँ भिन्न है।

ए सी. प्रारंभिक चर्च पिताओं के उद्धरण और व्याख्यान [75:02-76:35]

जी. लेखक और पांडुलिपियाँ भाग 2

[लघु वीडियो; एसी-एएफ को मिलाएं; 75:02-86:58]

हमारे पास शुरुआती चर्च के पिताओं के उद्धरण हैं। शुरुआती चर्च के पिता हमेशा नए नियम को उद्धृत करते हैं। अब जब कोई शुरुआती चर्च का पिता इसे उद्धृत कर रहा है, तो क्या यह संभव है कि वह इसे गलत तरीके से उद्धृत कर रहा है। शायद वह कोई शब्द भूल गया हो या शायद, वह इसे शब्दों में बदल रहा हो। कभी-कभी हम बाइबल को शब्दों में नहीं बदल रहे होते हैं, हम बस उसमें लिखी बातों का सारांश दे रहे होते हैं। लेकिन कई बार, वे इसे शब्दों में ही उद्धृत करते हैं, और इसलिए विद्वान शुरुआती चर्च के पिताओं के उन उद्धरणों को निकाल लेते हैं। और आप कहते हैं, यह हमारे असामाजिक पांडुलिपियों, और हमारे पपीरी पांडुलिपियों, और हमारी

छोटी पांडुलिपियों में जो है, उससे कैसे समान है, कैसे भिन्न है? शुरुआती चर्च के पिता इससे कैसे सहमत या असहमत हैं? तो ऐसे 1000 उद्धरण हैं जिन्हें छांटा जाता है।

फिर लेक्शनरी रीडिंग भी हैं। अब आप सभी जानते हैं कि लेक्शनरी रीडिंग क्या होती है? वे ज्यादातर चर्चों में आपकी भजन पुस्तक के पीछे होती हैं। हम डॉ. गॉर्डन ह्यूजेनबर्गर के साथ बोस्टन में पार्क स्ट्रीट चर्च जाते हैं, भजन पुस्तक के पीछे ये शास्त्रों की रीडिंग होती हैं। ये शास्त्रों की रीडिंग लेक्शनरी हैं, ये विशेष रीडिंग हैं जो चर्च के लिए संकलित की जाती हैं और ईस्टर, क्रिसमस या किसी भी मौसम में पढ़ी जाती हैं। प्रार्थना और पश्चाताप, आप जानते हैं, आराम या जो भी हो, पर अलग-अलग रीडिंग होंगी, वे अलग-अलग जगहों से कई शास्त्र अंश निकालेंगे और उन्हें एक साथ रखेंगे। हमारे पास शुरुआती चर्च लेक्शनरी रीडिंग हैं जिनकी हम तुलना कर सकते हैं। ये हमारी शुरुआती पांडुलिपियों, हमारी शुरुआती पांडुलिपियों, मिनिस्व्यूल्स, अनसियल्स और पपीरस में मौजूद चीज़ों से किस तरह समान या भिन्न हैं?

ई.: नए नियम की तुलना अन्य प्राचीन पांडुलिपियों से की गई [76:35-78:22]

अब, मैं नए नियम की तुलना प्लेटो जैसी किसी चीज़ से करना चाहता हूँ। प्लेटो, सुकरात के शिष्य, हमारे पास प्लेटो पर लगभग 900 ई. से 7 पांडुलिपियाँ हैं। आप उसके और नए नियम की पाँच हज़ार यूनानी पांडुलिपियों के बीच का अंतर देख सकते हैं, जो जॉन के रहने के 30 साल के भीतर 125 ई. तक जाती हैं। प्लेटो 400 ई.पू. से पहले रहते थे, और हमारी पहली और सबसे अच्छी पांडुलिपियाँ 900 ई.पू. से आ रही हैं? अब यह डेटा पुराना हो सकता है, मेरा अनुमान है कि उन्हें प्लेटो की नई पांडुलिपियाँ मिली हैं क्योंकि उन्हें बाइबल की नई पांडुलिपियाँ मिली हैं, लेकिन यह कुछ साल पहले की बात है, हमारे पास लगभग सात, मुट्ठी भर पांडुलिपियाँ थीं। यही बात अरस्तू के साथ भी सच है। अरस्तू के लिए हमारे पास मूल रूप से 5 पांडुलिपियाँ हैं। वे 1100 ई.पू. की हैं। अरस्तू कहाँ है? अरस्तू ने सिकंदर को पढ़ाया। अरस्तू ने सिकंदर को पढ़ाया। सिकंदर 333 ई.पू. का था। तो हम बात कर रहे हैं, ईसा से 300 साल पहले की। हमारी सबसे पुरानी सर्वश्रेष्ठ पांडुलिपियाँ 1100 ई. की हैं। उनमें से केवल 5 या 6 ही हैं। उनमें से बहुत कम हैं। इसलिए मैं कह

रहा हूँ कि यह ग्रीक न्यू टेस्टामेंट की तुलना में बहुत अलग है जहाँ 5000 से ज़्यादा ग्रीक पांडुलिपियाँ हैं। उनमें से कुछ 50, 100 साल पहले के समय में वापस जाती हैं जब न्यू टेस्टामेंट मूल रूप से लिखा गया था। इसलिए मैं बस इतना कह रहा हूँ कि न्यू टेस्टामेंट के लिए हमारी पांडुलिपि साक्ष्य बहुत ठोस है और यह बहुत पहले की है और इसके जैसा कोई दूसरा दस्तावेज़ नहीं है। कोई दूसरा प्राचीन दस्तावेज़ नहीं है जो इसकी बराबरी कर सके। यह बिल्कुल अविश्वसनीय है। इसलिए हमें परमेश्वर के वचन पर बहुत गर्व और बहुत भरोसा होना चाहिए जो हमारे पास है।

एई. असामाजिक पांडुलिपि परिवार [78:22-84:02]

अब, जब ये पांडुलिपियाँ आती हैं, तो आइए ग्रीक पांडुलिपियों को देखें। ये संपादक जो पांडुलिपियों को एक साथ रखते हैं, जो इन सभी हज़ारों पांडुलिपियों को एक साथ लाते हैं, जिन्हें लेखक कॉपी करते हैं, वे उन्हें परिवारों में समूहित करते हैं। अब परिवार क्या है? आपके पास एक मूल पांडुलिपि है और एक मूल पांडुलिपि की प्रतिलिपि एक लेखक, दो लेखक, तीन लेखक या चार लेखक बनाते हैं। लेकिन आप देखते हैं कि ये चारों लेखक उस मूल पांडुलिपि के पास वापस जाएँगे। तो आपके पास एक माता-पिता है और आपका एक बच्चा है। आपके पास एक माता-पिता है और इसकी पाँच बार प्रतिलिपि बनाई गई है, आपके पाँच बच्चे हैं। तो उन पाँच बच्चों में, अगर कोई त्रुटि है, तो मान लीजिए कि मूल व्यक्ति ने इसे गलत तरीके से कॉपी किया है। उसने "वहाँ" लिखा, "उनके" उसने इसे गलत तरीके से लिखा, अक्षरों को उलट दिया। फिर इन पाँच लोगों में भी वही त्रुटि हो सकती है जो माता-पिता बच्चे को प्रेषित करते हैं। फिर यह बच्चा उन्हें परिवारों में समूहित करेगा। तो यह सबसे अच्छा परिवार है। यह अलेक्ज़ेंडरियन परिवार माना जाने वाला अनूठे लोगों का परिवार है, और तीन बड़ी पांडुलिपियाँ परिवार हैं। ये तीन बड़े हैं। इस मामले में न्यू टेस्टामेंट और ओल्ड टेस्टामेंट का अधिकांश हिस्सा इसी पर आधारित है। कोडेक्स वेटिकनस, इसे "बी" अक्षर दिया गया है, वेटिकनस और यह 4वीं शताब्दी की अवधि से लगभग 300 ई.पू. से आता है। यह एक बड़ा कोडेक्स होगा। कोडेक्स एक किताब है। क्या आपको पता है? लगभग 100 ई.पू. से पहले, हमारे पास स्कॉल थे। 100 ई.पू. से पहले चीजें स्कॉल पर लिखी जाती थीं। फिर लगभग 100 ई.पू. और उसके बाद हमें बुक-बाउंड किताबें या कोडेक्स मिले। स्कॉल और किताब में क्या अंतर

है? अगर आप स्कॉल में कुछ एक्सेस करना चाहते हैं तो आपको इसे स्कॉल करना होगा और आपको पता है कि आपके पास यह बड़ा लंबा स्कॉल है जिसे आपको घुमाना है। जब आपके पास किताब होती है तो आपके पास लगभग तुरंत पहुंच होती है क्योंकि आप किताब में जा सकते हैं। यह बाउंड होती है और आप किसी स्थान पर जा सकते हैं और इसलिए यह आसान पहुंच की अनुमति देता है। किताब या कोडेक्स लगभग 100 ई.पू. में प्रचलन में आया। यह स्कॉल से किताबों की ओर बदलाव था, ठीक पहली शताब्दी के समय के आसपास और आप जानते हैं कि दोनों तरफ ढलान है जहाँ यह जाता है। कोडेक्स सिनेटिकस फिर से आता है, 300, 400 ई. आप जानते हैं कि उन्हें इन चीजों को ठीक से डेट करने में परेशानी होती है। फिर कोडेक्स एलेक्जेंड्रियनस अक्षर "ए" है और फिर यह पाँचवीं शताब्दी 400 का होगा। तो ये तीन बड़ी अनसियल पांडुलिपियाँ हैं। उन्हें एलेक्जेंड्रियन परिवार माना जाता है। एलेक्जेंड्रिया वह स्थान था जहाँ उनके पास कांग्रेस की प्राचीन लाइब्रेरी थी। एलेक्जेंड्रिया वह स्थान है जहाँ उन्होंने दुनिया भर से पुस्तकें एकत्र कीं। उनके पास कुछ बेहतरीन पुस्तकें हैं कोडेक्स एलेक्जेंड्रियनस संभवतः एलेक्जेंड्रियन संग्रह से आता है। एक सीजेरियन परिवार है और एक पश्चिमी परिवार है। अब मैं नीचे जा रहा हूँ, एलेक्जेंड्रियन परिवार को प्राथमिकता दी गई है क्योंकि हम इसकी जाँच करने में सक्षम हैं और यह सबसे सटीक लगता है। आपको ये सभी अन्य पांडुलिपियाँ मिलती हैं और आप जाँचते हैं कि कौन सी सबसे सटीक है। एलेक्जेंड्रियन परिवार सबसे अच्छा लगता है। सीजेरियन थोड़ा खराब है। पश्चिमी थोड़ा नीचे है। बीजान्टिन ग्रंथ बीजान्टिन के समय से आते हैं। इसलिए यह बहुत बाद में होने वाला है। कई बीजान्टिन ग्रंथ हैं। समय के साथ-साथ, आप जानते हैं कि 600, 700 से लेकर 1000 ई. तक, शास्त्री अधिक से अधिक पांडुलिपियों की प्रतिलिपि बना रहे हैं। ईसाइयों को अब सताया नहीं जा रहा है। आपके पास रोमन कैथोलिक चर्च है। फिर रोमन चर्च कई पांडुलिपियाँ बनाता है। इसलिए बीजान्टिन पांडुलिपियों को अक्सर टेक्सस रिसेप्टस कहा जाता है। कुछ लोग इसे टीआर, टेक्सस रिसेप्टस या मेजॉरिटी टेक्स्ट के रूप में संक्षिप्त करते हैं। कुछ लोग इसे मेजॉरिटी इसलिए कहते हैं क्योंकि इनमें बहुत सारे छोटे-छोटे ग्रंथ हैं। ये ऐसे ग्रंथ हैं जो आमतौर पर छोटे-छोटे होते हैं। इन छोटे-छोटे ग्रंथों की संख्या 100 या 1000 है जैसा कि हमने कहा है कि इन छोटे-छोटे ग्रंथों की संख्या 2-3000 है। इसलिए इसे बहुसंख्यक पाठ कहा जाता है क्योंकि ऐसे बहुत से पाठ हैं। लेकिन ध्यान दें

कि हालांकि बहुत से पाठ हैं, लेकिन वे बहुत बाद के हैं। इसलिए वे अन्य की तुलना में बाद के हैं। अन्य पहले के हैं, बहुत पहले के। हम 3, 4, 500 साल पहले की बात कर रहे हैं। इसलिए ये बहुसंख्यक हैं जो उनके पास सबसे अधिक हैं। टेक्स्टस रिसेप्टस वह है जिस पर किंग जेम्स आधारित है। किंग जेम्स का संस्करण 1611 में किया गया था। किंग जेम्स ने इसे प्रायोजित किया और उनके पास 40, 50, 60 अनुवादक थे और उन्होंने मूल रूप से उन्हें काम पर रखा और उन्होंने अनुवाद किया, किंग जेम्स अनुवाद। यह एक अविश्वसनीय अनुवाद है, बहुत अच्छी तरह से किया गया था। यह लगभग 1611 में किया गया था। 1611, विलियम ब्रैडफोर्ड के बोस्टन आने और फिर 1620 में मेफ्लावर और थैंक्सगिविंग के बारे में सोचें। तो यह इसके 9 साल बाद है, वे सिर्फ अमेरिका हैं, लोग आ रहे हैं, तीर्थयात्री अमेरिका आ रहे हैं। तो वैसे भी, यह बहुसंख्यक पाठ है। यह मूल रूप से किंग जेम्स संस्करण की पृष्ठभूमि है। अब, वैसे, क्या किंग जेम्स अनुवादकों को वैटिकनस, सिनैटिकस या एलेक्ज़ेंड्रियनस के बारे में पता था और इसका उत्तर है नहीं। उन्हें कोई जानकारी नहीं थी, सिनैटिकस केवल 1865 के आसपास पाया गया था। तो यह 2-300 साल बाद की बात है कि ये असामाजिक पांडुलिपियाँ आईं और लोगों को उनके बारे में पता चला। इसलिए मैं किंग जेम्स अनुवादकों को दोष नहीं देता, उन्होंने जो कुछ भी उनके पास था, उसके साथ सबसे अच्छा किया। उनके पास बहुत सारे छोटे-छोटे अंश थे। इसलिए उन्होंने छोटे-छोटे अंशों का इस्तेमाल किया। आज हम जानते हैं कि छोटे-छोटे अंश सबसे नए हैं, वे 1000 ई. में आए थे, इसलिए वे बहुत बाद के हैं। आज हमारे पास बहुत पहले के और बहुत बेहतर दस्तावेज़ हैं, और हम उनमें से 1000 से ज़्यादा का समन्वय करने में सक्षम हैं। किंग जेम्स के अनुवादकों के पास कंप्यूटर और अन्य चीज़ें नहीं थीं, जिससे वे पांडुलिपियों का समन्वय कर सकें।

ए.एफ. पांडुलिपियों का मूल्यांकन [84:02-86:58]

पांडुलिपियों के मूल्यांकन के लिए कुछ नियम दिए गए हैं। ये ऐसे नियम हैं जिनका इस्तेमाल प्रिंसटन में ब्रूस मेटज़गर जैसे व्यक्ति मूल्यांकन के लिए करेंगे। आपके पास दो पांडुलिपियाँ हैं और उनके अलग-अलग पाठ हैं, एक में कुछ और लिखा है, और दूसरी में कुछ और। आप इसका मूल्यांकन कैसे करेंगे? खैर, एक तरीका यह है कि आप कहते हैं कि पांडुलिपि जितनी पुरानी होगी,

उतना अच्छा होगा। ऐसा हमेशा जरूरी नहीं है, लेकिन ज्यादातर समय मैं 200 ई. में लिखे गए दस्तावेज़ को 1200 ई. में लिखे गए दस्तावेज़ के बजाय रखना पसंद करता हूँ, क्योंकि अगर यह 1200 ई. में लिखा गया है, तो इसे बार-बार कॉपी किया गया है, हर बार जब इसे कॉपी किया जाता है, तो किसी के द्वारा कुछ गलतियाँ करने की संभावना अधिक होती है। अगर कोई चीज़ 200 ई. से पहले की है, तो उसे एक या दो बार भी कॉपी नहीं किया गया है और उसमें गलती की संभावना भी नहीं है। इसलिए जितना पहले हो, उतना अच्छा है। हमेशा सच हो, यह जरूरी नहीं है, लेकिन यह एक सामान्य नियम है।

व्यापक भौगोलिक प्रसार बेहतर है। मैं इसका एक उदाहरण देता हूँ। मान लीजिए कि आपके पास बोस्टन में एक हज़ार पांडुलिपियाँ हैं, और मैं कहूँ, वे पाठ को एक तरह से पढ़ते हैं: “क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया।” ठीक है? और वहाँ एक हज़ार पांडुलिपियाँ हैं जिनमें लिखा है “क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया।” क्या होगा यदि आपके पास पाँच पांडुलिपियाँ हैं जो न्यूयॉर्क से हैं, पाँच पांडुलिपियाँ जो मान लें कि फिलाडेल्फिया से हैं, पाँच पांडुलिपियाँ जो मियामी में हैं, पाँच पांडुलिपियाँ जो एलए से हैं, और पाँच पांडुलिपियाँ सिएटल से हैं, और पाँच पांडुलिपियाँ डलास से हैं, और वे सभी तीस पांडुलिपियाँ उन छह या सात अलग-अलग स्थानों से हैं, वे सभी कहती हैं “तब परमेश्वर ने जगत से प्रेम किया और अपना एकलौता पुत्र दे दिया।” वे “के लिए” के बजाय “तब” कहते हैं। आप कौन सी पांडुलिपियाँ लेंगे? क्या आप बोस्टन की हज़ार पांडुलिपियाँ लेंगे, क्या आप अन्य पांडुलिपियाँ लेंगे? देखिए, यदि वे फैली हुई हैं और वे सभी एलए से सिएटल, डलास से फिलाडेल्फिया और मियामी तक सहमत हैं, वे सभी फैली हुई हैं, उनके भ्रष्ट होने की संभावना बहुत कम है। जबकि अगर बोस्टन में एक हज़ार पांडुलिपियाँ हैं, तो हाँ, बोस्टन में ज़्यादा पांडुलिपियाँ हो सकती हैं लेकिन समस्या यह है कि उन्होंने शायद एक-दूसरे की नकल की है और इसलिए उस त्रुटि को बस एक हज़ार बार दोहराया जाता है। इसलिए भौगोलिक फैलाव जितना ज़्यादा होगा, उसके सही होने की संभावना उतनी ही ज़्यादा होगी। हमेशा नहीं, लेकिन आम तौर पर, यह एक अच्छा सिद्धांत है।

दूसरा है परिवार का प्रकार। आप परिवार की जाँच करें। जहाँ तक वे जाँच कर पाए हैं, एलेक्ज़ेंड्रियन परिवार बीजान्टिन परिवार की तुलना में कहीं अधिक सटीक है। बीजान्टिन परिवार बहुसंख्यक पाठ है; ज़्यादातर छोटे-छोटे। यह देर से है, और एलेक्ज़ेंड्रियन बहुत ही प्रारंभिक अवास्तविक पाठ है और सही होने की अधिक संभावना है। इसलिए आप परिवार और पारिवारिक विरासत के आधार पर निर्णय लें।

ए.जी. लिपिकीय त्रुटियों के प्रकार: दृष्टि और ध्वनि [86:58-97:26]

एच. लिपिकीय त्रुटियाँ

[लघु वीडियो; एजी-एआई का संयोजन; 86:58-101:58 अंत]

अब, यह भाग मज़ेदार होना चाहिए। ये वे गलतियाँ हैं जो लेखकों ने कीं, और मैं बस आपको यह सोचना चाहता हूँ, मान लीजिए कि आप एक लेखक हैं जो नए नियम की नकल कर रहे हैं। मैं आपको एक कलम और स्याही देता हूँ, और मैं आपको एक कागज़ का टुकड़ा देता हूँ और मैं आपको कागज़ के दो रीम देता हूँ और आप कहते हैं, आपको लगता है कि नया नियम कितना लंबा है, 4 या 5 सौ पृष्ठों की हाथ से नकल करें। हाथ से नकल करते समय आप किस तरह की गलतियाँ करेंगे? सबसे पहले, दृष्टि की गलतियाँ होंगी। हो सकता है कि आप अपने सामने पांडुलिपि देखें, यह भी हाथ से लिखी गई है और आप यह नहीं समझ पा रहे हैं कि आदमी ने क्या किया है। इसलिए समान अक्षरों का भ्रम हो सकता है, और इसलिए यहाँ एक उदाहरण दिया गया है जहाँ अक्षर एमिक्रॉन और अक्षर सिग्मा, आप दोनों देख सकते हैं कि वे दोनों एक जैसे दिखते हैं, और इसलिए आप उन दो अक्षरों को भ्रमित कर सकते हैं। आप उन दो अक्षरों को भ्रमित कर सकते हैं, और इसलिए कभी-कभी अक्षर भ्रमित हो जाते हैं क्योंकि लोग उन्हें अजीब तरीके से लिखते हैं, इसलिए आप ठीक से नहीं बता सकते कि अक्षर क्या है। अंग्रेजी में, अक्षर r और अक्षर r, मैंने इसे अपनी लिखावट में किया, लड़की का नाम "मान" था और मैंने इसे या तो लिखा, और जब मैंने इसे अपने नोट्स में टाइप किया, तो यह "M ar r" था। मैंने उसका नाम Mann के बजाय Marr लिखा था। और इसलिए यह बहुत दिलचस्प है, "n" और "r", मैंने इसे अपनी लिखावट में भ्रमित कर दिया। तो, आप अक्षरों और उस तरह की चीजों को भ्रमित कर सकते हैं। होमोइओटेल्फूटन, होमोइओटेल्फूटन

क्या है? "होमो" का मतलब समान है, "टेल्यूटन" ग्रीक में "टेलोस" से है जिसका अर्थ है "अंत।" तो होमोइओटेल्यूटन का मतलब समान अंत होना है। क्या आपने कभी कोई पेज कॉपी किया है और वहां आप कॉपी करते हैं, और वही शब्द यहां नीचे पाया जाता है, और क्या होता है कि जब आप इसे लिखने के बाद पेज पर वापस जाते हैं और आप वापस कूदते हैं, वही अंत यहां नीचे है, आपकी आंख पेज पर नीचे कूद जाती है। आप तीन या चार छंद छोड़ देते हैं, क्योंकि इसका अंत समान है। होमोयोटेल्यूटन, वही अंत और आपकी आंख पेज पर नीचे कूद जाती है क्योंकि आप इसे लिखने के लिए यहां आए थे और जब आप वापस कूदे तो आप पेज पर नीचे कूद गए, और आपने तीन या चार छंद छोड़ दिए। वैसे, अगर ऐसा होता है तो क्या हमारे पास अन्य पांडुलिपियां हैं जिन्हें हम सही कर सकते हैं? हमारे पास एक हजार पांडुलिपियां हैं, और हम कहते हैं, उस आदमी ने अभी-अभी यह होमोयोटेल्यूटन किया, वह यहां समान अंत होने के कारण पेज पर नीचे कूद गया।

हैप्लोग्राफी का मतलब है कि यह एक बार लिखा गया है और इसे दो बार लिखा जाना चाहिए था। ऐसा कोई मार्ग हो सकता है जहाँ यीशु ने खुद को दोहराया हो, और वह दो अलग-अलग जगहों पर एक ही बात कहता है, और फिर जब लेखक इसे एक बार लिखता है तो वह वापस जाता है और कहता है, ओह मैंने अभी-अभी यह लिखा है, और फिर वह इसे छोड़ देता है। इसे दो बार लिखा जाना चाहिए था, लेकिन यह केवल एक बार लिखा गया था।

इसका विपरीत, और यह अधिक बार होता है, यह है कि लेखक एक बार कुछ लिखता है। वास्तव में मैंने भी ऐसा किया है, जब मैं टाइप कर रहा होता हूँ, तो मैं एक पंक्ति टाइप करता हूँ और फिर मैं इसे यहाँ टाइप करता हूँ और फिर मैं वापस आता हूँ और मैं उसी पंक्ति को फिर से टाइप करता हूँ। तो मैं एक ही चीज़ को दो बार टाइप करूँगा। वे इसे डिटोग्राफी कहते हैं, जैसे "डिटो"। यह दो बार लिखा जाता है, लेखक इसे दो बार कॉपी करता है, लेकिन इसे केवल एक बार लिखा जाना चाहिए था, लेकिन वह बस खुद को दोहराता है, क्योंकि उसकी नज़र वापस लाइन की शुरुआत पर चली गई।

अब, मेटाथेसिस क्या है? आप में से कितने लोगों ने इस शब्द "थियर" को लिखा है? आपने "ई" और "आई" को बदल दिया है। "ई" से पहले "आई" को "सी" के बाद छोड़कर, और इसलिए

आप उन्हें स्वचालित रूप से बदल देते हैं। तो इसे मेटाथेसिस कहते हैं। यह तब होता है जब आप दो अक्षर लेते हैं और उन्हें बदल देते हैं। और वैसे, अगर आप इसे “थियर” लिखते हुए देखते हैं तो क्या यह आपको भ्रमित करेगा? अगर आपने कभी न्यू टेस्टामेंट की एक ग्रीक पांडुलिपि देखी है, और इसे “थियर” लिखा गया है, तो क्या आप जानते हैं कि लेखक ने बस अक्षरों को बदल दिया है? आप इसे तुरंत जान जाएंगे, और इसलिए यह मेटाथेसिस समस्या आमतौर पर हल करने में काफी आसान है।

यहाँ एक है जिसे "फ्यूजन" कहा जाता है। इस कथन को पढ़ें। याद रखें मैंने आपको बताया था कि आपने जो सिनाईटिकस देखा था, उसमें सभी शब्द एक साथ रखे गए हैं। फ्यूजन का मतलब है कि दो शब्दों को एक साथ रखा जाता है जब उन्हें अलग नहीं किया जाना चाहिए था। इसे क्या पढ़ा जाता है? क्राइस्टिसनोव्हेयर। क्या यह "क्राइस्ट कहीं नहीं है" या "क्राइस्ट अब यहाँ है।" क्या अंतर है? यह बिल्कुल उसी मूल अक्षरों से पढ़ा जाता है, जो इस बात पर निर्भर करता है कि आप इसे "कहीं नहीं" या फिर यहाँ, "अभी यहाँ" विभाजित करते हैं। तो यह फ्यूजन का एक उदाहरण है। ऐसी चीजें एक साथ जुड़ जाती हैं जिन्हें अलग किया जाना चाहिए था।

विखंडन इसका विपरीत है। लोग इसे तब अलग कर देते हैं जब इसे एक साथ होना चाहिए था। इसलिए विखंडन और संलयन चाहे दो शब्द एक साथ चिपके हों या फिर उन्हें अलग-अलग खींचा गया हो, और इसलिए ये दृष्टि की त्रुटियाँ हैं।

ध्वनि की भी त्रुटियाँ हैं। शायद ऐसा करने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि इसे अंग्रेज़ी में ही किया जाए। उदाहरण के लिए, मेरे लिए “their” शब्द लिखें। मेरे लिए “their” शब्द लिखें। there शब्द एक होमोफोन है। समान ध्वनि वाला, “their” किस तरह से लिखा जा सकता है? “T heir” और हमने अभी-अभी किया। “There” भी लिखा जा सकता है, आपको नहीं पता कि “their” और “there” में ध्वनि के हिसाब से क्या अंतर है। फिर अगर कोई रचनात्मक होना चाहता है तो आप कह सकते हैं कि “there” वही है जो “they 're” है, जिसका मतलब है कि वे हैं। उनकी किताब या उनकी कार या वे यहाँ हैं। दूसरा होगा। ग्रीक में आपको यही मिलता है। इस शब्द का उच्चारण “auton” है। इस शब्द का उच्चारण “autwn” है। तो “auton,” “autwn” का उच्चारण बिल्कुल उसी

तरह किया जाता है। तो अगर कोई व्यक्ति लेखकों के एक समूह के सामने खड़ा है और वे उससे मौखिक रूप से लिखवा रहे हैं, और वह आउटवन कहता है, तो वे लेखक कैसे जान पाएंगे कि यह इस तरह लिखा गया है ऑटोन या उस तरह ऑटवन? उनका उच्चारण बिल्कुल एक जैसा ही होता है। तो ये ध्वनि की त्रुटियाँ होंगी।

मन की भी गलतियाँ होती हैं। मन की गलतियों का एक तरीका है पर्यायवाची शब्द का इस्तेमाल करना। पिछले कुछ सालों में मैंने अपने छात्रों से ये ट्रांसक्रिप्शन करवाया है, और कभी-कभी जब मैं सुनता हूँ, तो उन्हें लेक्चर सुनना पड़ता है और उसे टाइप करना पड़ता है। मेरे लिए दिलचस्प बात यह है कि कई बार जब मैं पढ़ता हूँ तो वे शब्द को गलत टाइप कर देते हैं और पर्यायवाची शब्द का इस्तेमाल कर देते हैं। आप जानते हैं कि डॉ. वैनॉय या मैकरे यह कहते हैं और फिर वे उसके लिए दूसरा शब्द डाल देते हैं। इसलिए वे उसके लिए पर्यायवाची शब्द बदल देते हैं। यह दिलचस्प है कि हमारा दिमाग इस तरह से अपने आप ही भ्रष्टाचार को सामंजस्य बिठा लेता है। कभी-कभी लेखकों को पवित्रशास्त्र में कुछ खास पाठ लिखना पसंद नहीं आता। अय्यूब इसका एक बेहतरीन उदाहरण है। अय्यूब की किताब में, अय्यूब की पत्नी उससे कहती है और मैं ठीक उसी तरह से उद्धृत करूँगा जिस तरह से हिब्रू में कहा गया है, यह है "भगवान को आशीर्वाद दें और मर जाएँ अय्यूब, आप जानते हैं कि भगवान ने आपके बच्चों को छीन लिया है, उन्होंने आपकी सारी संपत्ति छीन ली है, अब आपके शरीर पर फोड़े हो गए हैं। भगवान को आशीर्वाद दें और मर जाएँ।" खैर, हर कोई जानता है कि पाठ में वास्तव में लिखा होना चाहिए, "ईश्वर को कोसें और मर जाएँ।" वह यह नहीं कह रही थी कि ईश्वर को आशीर्वाद दें और मर जाएँ, वह कह रही थी "ईश्वर को कोसें और मर जाएँ", लेकिन शास्त्रियों को "ईश्वर को कोसें" लिखना पसंद नहीं था, इसलिए उन्होंने "ईश्वर को आशीर्वाद दें" लिख दिया, और हर कोई जानता है कि उन्हें इसे बदलने की जरूरत है, उन्हें इसे पलटने की जरूरत है, लेकिन इसे भ्रष्टाचारों का सामंजस्य स्थापित करना कहा जाता है।

मिश्रण। यह एक दिलचस्प बात है, क्या आप पवित्रशास्त्र में शब्द जोड़ना चाहेंगे या उन्हें हटाना चाहेंगे? मान लीजिए कि आप एक लेखक हैं और आपके पास एक पांडुलिपि है। यह वास्तव में प्रेरितों के काम की पुस्तक से है जहाँ लिखा है, "प्रभु की कलीसिया।" एक पांडुलिपि कहती है

"प्रभु की कलीसिया।" दूसरी पांडुलिपि कहती है "ईश्वर की कलीसिया।" तो एक पांडुलिपि कहती है, "प्रभु की कलीसिया," दूसरी पांडुलिपि कहती है "ईश्वर की कलीसिया।" क्या आपको पता है कि 100 साल बाद आपको क्या मिला? लेखक ने क्या किया? एक पांडुलिपि में लिखा है "प्रभु की कलीसिया," दूसरी पांडुलिपि कहती है "ईश्वर की कलीसिया।" 100 साल बाद आपको पता है कि आपको क्या मिला? "प्रभु ईश्वर की कलीसिया।" अब लेखक ने क्या किया? लेखक कहता है कि उसके पास एक पांडुलिपि है जिसमें लिखा है "ईश्वर की कलीसिया," एक और कहती है "प्रभु की कलीसिया," मुझे नहीं पता कि यह कौन सी है इसलिए अगर मैं इसे "प्रभु ईश्वर की कलीसिया" बना दूँ, तो मुझे पता है कि मेरे पास एक है, यह किसी भी तरह से सही है। तो क्या हुआ कि पाठ में वृद्धि की प्रवृत्ति थी, अब यह, अब यह महत्वपूर्ण बिंदु है। पाठ में वृद्धि की प्रवृत्ति थी। शास्त्रियों ने सामग्री को हटाना नहीं चाहा, इसलिए उन्होंने इसे रखा, इसलिए "प्रभु का चर्च", "ईश्वर का चर्च" बाद में "प्रभु ईश्वर का चर्च" बन गया। फिर पाठ में वृद्धि की प्रवृत्ति है। रहस्योद्घाटन की पुस्तक का शीर्षक मूल रूप से, "यूहन्ना के सर्वनाश की पुस्तक" था, और फिर यह "यीशु के प्रिय शिष्य, यूहन्ना का सर्वनाश" था, और फिर यह "यीशु के प्रिय शिष्य, इफिसुस के चर्च के पादरी, यूहन्ना का सर्वनाश" या कुछ और था, और इसलिए रहस्योद्घाटन की पुस्तक का शीर्षक सदियों से बढ़ता और बढ़ता और बढ़ता रहा। इसलिए पाठ में वृद्धि की प्रवृत्ति थी, इसलिए संभवतः कौन सा सही है, लंबा या छोटा? छोटे पढ़ने को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। इस प्रकार ये संपादक पीछे लौटकर कहते हैं कि नहीं, लंबा पाठ संभवतः सही नहीं है, इसलिए वे वापस छोटे पाठ पर लौट आते हैं।

एच. वेरिगंट के मूल्यांकन के नियम [97:26- 99:15]

अब, विचरण के मूल्यांकन पर आते हैं। आपके पास दो पांडुलिपियाँ और विचरण हैं, वे एक दूसरे से भिन्न हैं। आप विचरण का मूल्यांकन कैसे करेंगे? यहाँ बताया गया है कि मेट्रज़गर जैसे लोग संपादक इसे कैसे करते हैं। वे कहेंगे कि अधिक कठिन पठन को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। वह जिसका अर्थ निकालना कठिन है। लेखक आमतौर पर चीजों को अर्थपूर्ण बनाने के लिए उन्हें सरल बनाते हैं। इसलिए अधिक कठिन पठन को प्राथमिकता दी जानी चाहिए, जिसे समझना कठिन हो। लेखक आमतौर पर उन्हें नरम कर देते हैं ताकि मूल पठन संभवतः अधिक कठिन हो।

यहाँ हमने अभी जो बात की है, वह है। छोटी रीडिंग को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। पाठ में वृद्धि की प्रवृत्ति थी। इसलिए जितना अधिक मौलिक होगा, संभवतः उतनी ही छोटी रीडिंग होगी। अब ये लोग पूर्णतः संपादक नहीं हैं, बस इन बातों का वजन करते हैं। आमतौर पर छोटी रीडिंग को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। आप हमेशा छोटी रीडिंग नहीं लेते हैं, लेकिन आपको इन नियमों के साथ काम करना होगा, जो उन्होंने इन सभी हज़ारों पांडुलिपियों की जाँच करने के बाद देखे हैं। अधिक कठिन रीडिंग को प्राथमिकता दी जाती है, और छोटी रीडिंग को प्राथमिकता दी जाती है।

सेंट जॉन की पुस्तक में होते हैं, तो वह पाठ जो लेखक की शैली के लिए सबसे उपयुक्त होता है, और उसमें लिखा होता है, "अल्लुवन" "एक दूसरे"। जॉन हर जगह उस शब्द, "एक दूसरे" का उपयोग करता है। इसलिए यदि आप देखते हैं कि एक पांडुलिपि में "एक दूसरे" है और दूसरे में नहीं है, तो संभवतः यह "एक दूसरे" था क्योंकि यह जॉन की लेखन शैली के अनुकूल था। "आमेन, आमेन लेगव ह्यूमिन" - "मैं तुमसे सच सच कहता हूँ" एक और मुहावरा जिसका जॉन उपयोग करता है। तो आप देखते हैं कि जैसे ही यह कहता है, "आमेन, आमेन" तो आप जानते हैं कि यह "लेगव ह्यूमिन" होना चाहिए क्योंकि वह हमेशा यही कहता है। इसलिए आमतौर पर वह पाठ चुना जाता है जो लेखक की शैली के लिए सबसे उपयुक्त होता है।

AI. नए नियम में 3 प्रमुख पाठ्य संबंधी समस्याएँ: मरकुस 16, यूहन्ना 8, 1 यूहन्ना 5:7 [99:15-101:55]

अब, नए नियम में समस्याग्रस्त पाठ के तीन बड़े उदाहरण हैं, और ये तीन बड़े उदाहरण हैं। दूसरे शब्दों में, ये तीन जगहें हैं जहाँ पांडुलिपियाँ एक दूसरे से असहमत हैं। आप देखिए कि हमारे पास 5000 पांडुलिपियाँ हैं, तीन जगहें हैं जो बड़ी और महत्वपूर्ण हैं। पांडुलिपियों के बीच ज़्यादातर समस्याएँ बीन्स के पहाड़ के बराबर भी नहीं हैं। उनमें से ज़्यादातर, यह "उनका" और "उनका" वर्तनी के बीच का अंतर है, जब आप इसे देखते हैं, तो आपको तुरंत पता चल जाता है कि यह कोई बड़ी बात नहीं है। इनमें से कोई भी बनावटी बदलाव किसी भी सिद्धांत को प्रभावित नहीं करता है। तो यह सिर्फ आप जानते हैं, ये वास्तव में महत्वपूर्ण चीजें नहीं हैं, लेकिन कुछ लोग कहते हैं, बाइबल में ये सभी बनावटी बदलाव हैं, यह कोई बड़ी बात नहीं है, यह वास्तव में आपके साथ ईमानदारी से

इतना प्रभावित नहीं करता है, मैं बस उन्हें कम करना चाहता हूँ और फिर हम अगली बार उनके बारे में बात करेंगे। मार्क की पुस्तक का अंत वास्तव में महत्वपूर्ण है मार्क अध्याय 16 श्लोक 8, 9 और उसके बाद, वहाँ एक विराम है, मार्क की पुस्तक के अंत में। मार्क की पुस्तक का अंत पाठ आलोचना में प्रमुख समस्याओं में से एक है।

यूहन्ना 8 में व्यभिचार में पकड़ी गई महिला की कहानी है, और ये फरीसी उसे पत्थर मारकर मार डालने की कोशिश कर रहे हैं, वे यीशु के पास आते हैं। अगर उसे पत्थर मारा जाता, तो वह व्यभिचार करती, और यीशु कहते हैं "जो कोई भी सिद्ध है, वह पहला पत्थर उठाए और फेंके", और यीशु उस महिला से कहते हैं, "मैं तुम्हें दोषी नहीं ठहराता, जाओ और अपने पाप के जीवन को छोड़ दो।" यही वह पेरिकोपे [कहानी] है जो यूहन्ना 8 में व्यभिचारी महिला पर है और यह भी सवालियों के घेरे में है।

फिर तीसरा जो बहुत बड़ा है वह है 1 यूहन्ना 5:7, और यह त्रित्व के बारे में बात करता है: पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा। 1 यूहन्ना अध्याय 5 पद 7, अब वैसे, क्या त्रित्व इस पद पर निर्भर करता है? नहीं, हमने अन्य पदों से त्रित्व की स्थापना की है, लेकिन यदि आप KJV का उपयोग करते हैं तो इस पद में 1 यूहन्ना 5:7 में त्रित्व का सबसे स्पष्ट कथन है।

ये तीन बड़े स्थान हैं, जहाँ न्यू टेस्टामेंट में ये पाठ्य भिन्नताएँ हैं, और हम अगली बार उनके बारे में बात करेंगे। आपका ध्यान देने के लिए धन्यवाद। आपका दिन शुभ हो।

लीन बीडल और आयशा डिसिल्वा
द्वारा लिखित जेन स्ट्राका द्वारा संपादित
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा संपादित रफ